रमज़ान की बरकतें

TAHA FOUNDATION
Lucknow-India

रमज़ान
की
बरकतें

TAHA FOUNDATION
LUCKNOW-INDIA

किताब	: रमजान की बरकतें
लेखक	: रिसर्च ग्रूप, ताहा फ़ाउण्डेशन
पेज	: 72
पब्लिशर	: ताहा फ़ाउण्डेशन, लखनऊ
तादाद	: 5 हज़ार
सन	: अगस्त 2009

यह किताब जनाब अज़ीज़ ज़ैदी साहब (Pacific Travels) के माली तआवुन से छपी है जो कि Free Distribute की जा रही है। आप भी अपने मशवरों और तआवुन के ज़रिये दीनी तालीमात को समाज तक पहुचाने मे हमारे साथ शरीक हो सकते हैं।

इस किताब की फ़्री कापी के लिए contact करें:

TAHA FOUNDATION
LUCKNOW-INDIA

0522-400 9558, 9956 620 017, 9026 812 570

एक इन्सान जब कोई काम करना चाहता है तो उस काम के मक़सद, फ़ायदे व नुक़्सान को जानने का उसे पूरा हक़ होता है क्योंकि उसकी अक़्ल उसे ऐसा कोई भी काम करने से रोकती है जिसका नुक़्सान या फ़ायदा उसे मालूम न हो। फ़ायदे या नुक़्सान को जाने बिना या तो वह सिरे से उस काम को करता ही नहीं है और अगर करता भी है तो किसी डर या लालच की वजह से करता है जैसे जहन्नम का डर या जन्नत की लालच लेकिन इस मक़सद से काम करने पर बार–बार उसके sub-concious में यह बात उभरती रहती है कि क्या ऐसा मुम्किन नहीं था कि इस काम को किये बिना ही वह अपने मक़सद तक पहुंच जाता और इस डर से बचा रह जाता। सच्चाई यह है कि अगर इन्सान किसी काम के अन्दर छुपे हुए फ़ायदों को न जानता हो तो उसकी सबसे बड़ी चाहत यही होती है कि उस काम को किये बिना ही उसे जन्नत मिल जाये और वह जहन्नम के अज़ाब से भी बच जाए।

रोज़े का ज़ाहिर व बातिन

इन्सान जिस्म और रूह से बना है। जिस्म, रूह के मूवमेंन्टस का माध्यम और रूह जिस्म की ज़िन्दगी है। अगर जिस्म से रूह निकल जाए तो जिस्म मुर्दा और बेकार हो जाता है और दूसरी तरफ़ रूह की Activities ख़त्म हो जाती हैं। इन्सान के आमाल और इबादतें भी बिल्कुल इन्सान की तरह हैं, उनमें भी एक बाहरी पहलू है यानी अमल और एक अन्दरूनी और रूहानी पहलू है यानी किसी भी अमल की हिकमत।

जिस तरह इन्सान की ज़िन्दगी उसकी रूह में होती है उसी तरह अमल और इबादत की ज़िन्दगी भी उसकी हिकमत या रूहानी पहलू में छुपी हुई होती है और जिस तरह रूह के बिना आदमी मर जाता है उसी तरह हिकमत के बिना अमल और इबादतें भी मुर्दा हो जाती हैं लेकिन ज़्यादातर लोगों की समस्या यह है कि वह ज़ाहिर पर ईमान लाते और यक़ीन करते हैं, इस लिए वह अपने शरीर को सजाने–सवांरने में इतने Busy हो जाते हैं कि उन्हें अपनी रूह के लिए कुछ करने का समय ही नहीं मिल पाता। आज सारी इन्सानियत इसी मुश्किल से जूझ रही है। उसे शायद यह नहीं पता कि रूह के बिना शरीर जितना भी मज़बूत हो जाए, मुर्दा ही होता है। आज शहर, गली, सड़कें, मकान सब कुछ तो सजा हुआ है मगर इनमे रहने वाले इन्सान मुर्दा हैं। जिनकी ज़िन्दगी एक मशीन या रोबोट की तरह हो गयी है। इन लोगों की सारी भाग–दौड़ सिर्फ़ इसलिए होती है कि इनके जिस्म की सारी ज़रूरतें और इनकी सारी ख़्वाहिशें बस किसी तरह पूरी हो जाएं चाहे इसका उनकी रूह पर कितना ही बुरा असर

क्यों न पड़े। तअज्जुब इस बात पर होता है कि यह सब कुछ करने के बाद यही इन्सान शिकायत करता है कि समाज में जुर्म और ज़ुल्म बढ़ता जा रहा है जबकि वह जानता है कि अगर मरे हुए जिस्म को ज़मीन में दफ़्न न कर दिया जाए तो उसमें बदबू का फ़ैलना ज़रूरी और नेचरल है।

A Serious issue

इन्सानों की तरह अगर इन्सानी आमाल और इबादतें भी रूह के बिना अन्जाम दी जाएं तो जहां इनका हमारी ज़िन्दगी पर कोई अच्छा असर नहीं पड़ता वहीं सच्चाई यह है कि यह हमारी बहुत सी मुसीबतों और नुक़्सानों की वजह भी बन जाती हैं। दिखावा, धोखा, मक्कारी, घमण्ड और बढ़ा–चढ़ा कर पेश करना जैसी अख़्लाक़ी बुराईयां ज़ियादातर उसी तरह की इबादतों से पैदा होती हैं जिनमें रूह नहीं होती, दुनिया के ज़ियादातर लोगों की इबादतें इसी तरह की हैं। इबादतों के इन बुरे नती!जों को देखकर समाज का एक बड़ा हिस्सा इन इबादतों से नफ़रत करने लगता है और दूर हो जाता है, दूर होना भी चाहिए क्योंकि मुर्दा चीज़ों से हर आदमी दूर रहना चाहता है।

फिर यह शिकायत की जाती है कि हमारी जवान नस्ल मस्जिदों में नहीं आती, हमारे नौजवान रोज़े नहीं रखते और यह सही भी है लेकिन वह मस्जिदों में इसलिए नहीं आते क्योंकि उन्हें नमाज़ की हिकमत नहीं मालूम है, उन्हें रोज़े का फ़ल्सफ़ा नहीं बताया गया है, उन्हें नमाज़ व रोज़े के फ़ायदे या नुक़्सान समझाए ही नहीं गये हैं।

हल

आज जबकि सारी मानवता अपने अन्दर रूहानियत और Sprituality की कमी का भरपूर एहसास कर रही है और दूसरी तरफ़ इन मुर्दा इबादतों को स्वीकार भी नहीं किया जा सकता तो आवश्यकता इस बात की है कि इन सारी इबादतों के फ़ायदे–नुक़्सान, इनका अर्थ, इनका महत्व और इनकी Philosophy बताई जाये, लोगों को जितने दीनी एहकाम बताए जाएं उनसे कहीं अधिक उनका महत्व व Philosophy बताई जाए।

हो सकता है कि कोई यह हल पेश करे कि जो चीज़ मुर्दा हो जाती है उसे छोड़ दिया जाता है इसलिए मुर्दा नमाज़ों, मुर्दा रोज़ों, मुर्दा हज, मुर्दा अज़ादारी और यहां तक कि मुर्दा दीन को भी छोड़ दिया जाए। अगर इस छोड़ने का मतलब यह है कि इन मुर्दा इबादतों और आमाल को छोड़कर ज़िन्दा इबादतों, आमाल और दीन को स्वीकार किया जाए तो यह वही हल है जो ऊपर पेश किया गया है यानी इन इबादतों को जीवन दिया जाए, इनमें रूह फूंकी जाए और इनके महत्व व Philosophy को बयान करके इनमें जान डाली जाए लेकिन अगर इसका मतलब यह हो कि सिरे से दीन को ही छोड़ दिया जाए, सिरे से इबादतें ही न की जाएं, सिरे से अज़ादारी ही न की जाए तो यह एक ऐसा हल है जैसे कोई कहे कि आज की अधिकतर मानवता और Societies रूहानियत से ख़ाली हैं इसलिए मानवता और इन्सानों को ही क़त्ल कर दिया जाए। यह कोई हल नही है कि पलकें सवांरने में आँखें ही फोड़ दी जाएं।

पश्चिमी विचारधारा और उसका असर

पश्चिम वासियों ख़ासकर यूरोप वालों ने सही करने के बजाए छोड़ने वाले हल को स्वीकार किया यानी जब उन्हें बिगड़ा हुआ ईसाई मज़हब, मुर्दा और बेजान दिखा तो उन्होंने अपने दीन को जीवित करने और उसमें जान डालने के बजाए खुद उसे ही छोड़ दिया। जिसकी वजह से आज मानवता एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गई है जहां से उसके सर्वनाश के सारे कारण साफ़–साफ़ दिखाई पड़ रहे हैं। यह भी सही है कि Science और टेक्नॉलोजी में आज का इन्सान बहुत आगे चला गया है लेकिन दीन और खुदा से ख़ाली इस तरक़्क़ी के तोहफ़े बहुत ख़तरनाक और नुक़्सान पहुंचाने वाले हैं। पहली और दूसरी World War से लेकर फ़िलिस्तीन, अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ में होने वाले अत्याचारों और हैवानियत के सारे मन्ज़र इसी तरक़्क़ी का तोहफ़ा हैं।

आज दीन और दीनदारी के बिना इन्सान अन्दर से बिल्कुल खोखला हो गया है और ऐसा खोखला हुआ है कि बाहर से तो बहुत ख़ूबसूरत दिखता है लेकिन अन्दर कुछ नहीं है और अब इस समस्या का हल यह है कि इन्सान फिर से दीन की तरफ़ पलटे लेकिन एक ऐसे दीन की ओर जो ज़िन्दा हो मुर्दा न हो, एक ऐसे दीन की ओर लौटे जिसके पास जीवन की हर मुश्किल का हल पाया जाता हो। आज इन्सान की भलाई इसी में है कि वह फिर से खुदा की ओर पलटे लेकिन ऐसे खुदा की ओर जिसके सारे कामों को पोप या चर्च का Father या इस Father की तरह हमारे यहां का मुल्ला पूरा न करता हो। आज मानवता

को शान्ति और सुकून तभी मिल सकता है जब वह फिर से ख़ुदा और ख़ुदा की इबादत की ओर वापस आए।

"आगाह हो जाओ कि सुकून व इतमीनान ख़ुदा को याद करने से ही हासिल होता है।" (सूरए रअ्द/28)

रोजे की हिकमत और फ़ायदों की एहमियत

रोज़े की हिकमत और फ़ायदों को बयान करना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि आदमी के मन में और भी बहुत से सवाल उठ सकते हैं और अगर इन सवालों के सही जवाब नहीं दिये गये तो हो सकता है कि यह सवाल, सवाल न रहकर एतेराज़ और आरोप में बदल जाएं, जैसे :-

(1) रोज़ा रखने से इन्सान के जीवन में एक बदलाव आ जाता है और उसकी Routine की ज़िन्दगी पर फ़र्क़ पड़ जाता है जो उसके लिए कठिन है।

(2) रोज़ा रखने से इन्सान कमज़ोर हो जाता है।

(3) दिन भर की भूख–प्यास अगर नामुमकिन नहीं तो मुश्किल अवश्य है, खाना–पीना शरीर की आवश्यकता है जो पूरी होना चाहिए।

(4) अपनी मेहनत से कमाई हुई हलाल चीज़ें ही क्यों हम पर हराम हो जाती हैं?

(5) यूं तो हर इबादत ही एक प्रकार की पाबन्दी होती है लेकिन रमज़ान में इन्सान एक महीने तक बहुत सख़्त पाबन्दियों में क़ैद हो जाता है।

(6) एक टिप्पणी जो रोज़े के साथ–साथ पूरे दीन पर भी की जाती है वह यह है कि अगर दीन और दीनी एहकाम नेचॅरल हैं तो उन्हें करने में कठिनाई और मुश्किल का एहसास क्यों होता है?

(7) अगर इन्सान रोज़ा न रखे तो उसके अन्दर कौन सी कमी पैदा हो जाती है?

इन सवालों और आरोपों पर बात करने से पहले यह बता देना ज़रूरी है कि यह और इस प्रकार के दूसरे सारे सवाल सिर्फ़ रोज़े की हिकमत, फ़ायदों और फ़लसफ़े को न जानने के कारण पैदा होते हैं। इसलिए यहाँ इन सवालों के जवाब देते हुए रोज़े की हिकमत और फ़ायदों को भी बयान किया जाएगा।

रोज़ाना की एक जैसी ज़िन्दगी से छुटकारा

रोज़े पर एक सीरियस आरोप यह लगता है कि रोज़ा रखने से हमारे डेली Routine में उथल–पुथल मच जाती है और हमारी डेली लॉइफ़ का सिस्टम गड़बड़ा जाता है। इसलिए बहुत से लोग रोज़ा न रखने का कारण यह बताते हैं कि हमारा काम ऐसा है कि हम रोज़ा नहीं रख सकते और इस तरह अपने आपको निश्चिन्त कर लेते हैं बल्कि कभी–कभी तो इस बात पर गर्व भी करते हैं कि हम तो बिज़निसमैन हैं, हमारी ज़िन्दगी का एक Routine है जिसे छोड़कर रोज़ा रखना हमारे लिए बहुत कठिन बल्कि नामुमकिन है, जैसे वह यह कहना चाहते हों कि रोज़ा रखना या इस प्रकार के दूसरे काम करना हमें शोभा नहीं देते बल्कि यह सब तो रिटायर्ड और बेकार बैठे लोगों के लिए है जिनके पास यह सब करने के लिए अच्छा ख़ासा समय होता है।

इस तरह के विचार रोज़े और इसके अतिरिक्त दूसरी इबादतों की एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिकमत को न जानने के कारण पैदा होते

हैं और वह है डेली लॉइफ़ और डेली Routine की क़ैद से छुटकारा।

हर इन्सान अपने जीवन में खुद अपने हाथों से बनाए हुए Routine और डेली लाइफ़ के एक सुनियोजित घेरे का क़ैदी होता है और यह घेरा इतना मज़बूत होता है कि इन्सान को बाहर निकलने की अनुमति बिल्कुल नहीं देता। इसी तरह समाज के हर ग्रुप का अपना एक ख़ास घेरा है, Businessman का अलग घेरा है, सरकारी नौकरी करने वालों का अलग, टीचर्स का अलग, स्टूडेंटस का अलग और किसानों का अपना एक अलग घेरा है लेकिन एक चीज़ इन सब में पाई जाती है कि सब के सब अपनी–अपनी डेली लॉइफ़ और डेली Routine में सख़्ती से जकड़े हुए हैं यानी सुबह उठकर नाश्ता करना, फिर रोज़ी–रोटी के लिए बाज़ार, आफ़िस, खेत या जहां भी जाना हो वहां जाना और वहां जाकर भी वही काम करना जो रोज़ाना करते हैं, फिर घर वापस आकर घरेलू कामों में लग जाना जैसे खाना–पीना, आपस में बातें करना, TV देखना ---और फिर अन्त में नींद की गोद में सर रखकर सो जाना ताकि अगले दिन फिर स Refreshed & Recharged होकर अपने उसी Routine में लग जाएं।

इन्सानी जीवन एक Triangle के चारों ओर चक्कर लगा रहा है जिसके तीन Angles में से किसी एक पर वह अपना क़ीमती समय ख़र्च कर रहा होता है और वह Triangle यह है :–

(1) खाने–पीने के लिए सामान जमा करना।

(2) इस सामान को खाना।

(3) और जमा करने के लिए आराम करना।

यह 100 % जानवरों वाली ज़िन्दगी है और अगर इसमें कुछ चीज़ों को और जोड़ दिया जाए जैसे अगर इस Triangle से बचे हुए समय को अपनी मनपसन्द तफ़रीह, अय्याशी, सैर–सपाटे और बुराईयों में लगा दे तो इन्सान की हालत जानवरों से भी बदतर हो जाती है। वह इन्सान जिसे फ़रिश्तों ने सजदा किया था उसकी बड़ी अजीबो–ग़रीब तस्वीर सामने आने लगती है और तअज्जुब इस बात पर होता है कि वह अपनी इसी ज़िन्दगी पर गर्व भी करता है कि हमारी ज़िन्दगी हमें इतना मौक़ा ही नहीं देती कि हम कोई ऐसा काम करें जो हमारे डेली Routine को बिगाड़ दे।

रोज़े और दूसरे बहुत से इस्लामी एहकाम का एक बहुत बड़ा मक़सद यह भी है कि इन्सान को उसकी आदतों के छोटे से घेरे से बाहर निकाला जाए, इसके भी कुछ महत्वपूर्ण फ़ायदे और मक़सद हैं जिनकी ओर नीचे सिर्फ़ इशारा किया जा रहा है:–

(1) खुद अपनी तलाश

रोज़ाना की एक ही जैसी ज़िन्दगी औरं डेली Routine का फैलाव इतना समय ही नहीं देता था कि इन्सान अपने अन्दर झाँक कर देख भी सके और अपने आपको पहचानने की कोशिश करे। अब उसे रोज़े के द्वारा उसके Routine से निकाला गया है ताकि वह थोड़ा समय अपने आपको भी दे सके और खुद को तलाश कर सके, साथ ही अपने अन्दर झाँक कर देखे कि इतनी शक्तियों और गुणों के साथ क्यों इस दुनिया में भेजा गया है?

(2) बाहर की दुनिया

इन्सान अपने बाहर की दुनिया को देखे कि इतने बड़े संसार में और इसमें चारो ओर फैली हुई इतनी नेअ्मतों को किसके लिए और क्यों पैदा किया गया है?

(3) अपने मक़सद की पहचान

इन्सान अगर अपने अन्दर की शक्तियों और इस संसार को किसी हद तक पहचान ले तो अपने आप अपनी मन्ज़िल और मक़सद को भी पहचान लेगा कि अपनी इन बड़ी–बड़ी शक्तियों और चारों ओर बिखरी पड़ी इन नेअ्मतों के साथ उसे कहां तक जाना है। अगर ऐसा हो जाता है तो फिर खुद को पहचान चुके इस इन्सान की नज़र जानवरों वाले Triangle की ओर नहीं होगी क्योंकि यह जज़्बात, एहसास और ख़ाहिशें खुदा ने इन्सान को इसलिए दी हैं ताकि वह अपने आपको सम्पूर्ण कर सके, खुद को परफैक्शन दे सके जैसे सैक्स की ख़ाहिश इन्सान के अन्दर इसलिए रखी ताकि नस्लें पैदा हो सकें। खाने–पीने की ख़ाहिश इसलिए दी ताकि इन्सान खा–पी कर खुद को ज़िन्दा और स्वस्थ्य रख सके लेकिन सिर्फ़ औलाद और अपने आपको जीवित व स्वस्थ्य रखना ही इन्सान का एक मात्र मक़सद नहीं है बल्कि उसका सबसे बड़ा मक़सद और मन्ज़िल अपने अधूरेपन को दूर करके खुद को परफैक्शन तक ले जाना है जहां उसके अन्दर कोई कमी न हो।

(4) खुदा की तलाश और पहचान

परफैक्शन यानी कमाल तक पहुँच जाना ही इन्सान की आख़िरी मन्ज़िल नहीं है बल्कि आख़िरी मन्ज़िल खुदा तक पहुँचना और

उसको पहचानना है,

"ऐ इन्सान! तू खुदा की तरफ़ जाने की कोशिश कर रहा है, एक दिन तू उस से मुलाक़ात करेगा।" (सूरए इनश्क़ाक़/6)

इन्सान का सफ़र खुदा की ओर है और उसे खुदा से मुलाक़ात करना है और यही है इन्सान की आख़री मन्ज़िल। यह वह चीज़ है जो इबादतों की अधिकता से नहीं बल्कि इबादतों को पहचान कर, समझ कर और उन्हें उनकी सारी शर्तों के साथ करने से मिलती है। इन्सान जितना पाक साफ़ और गुनाहों व बुराईयों से दूर होगा उतना ही खुदा से क़रीब होता जायेगा।

"पाकीज़ा शब्द या बातें खुदा की ओर बुलन्द होतीं हैं और अमले सालेह उन्हें बुलन्द करता है।" (सूरए फ़ातिर/10)

अमले सालेह उस अमल और काम को कहा जाता है जिसमें इतनी शक्ति पाई जाती हो कि वह इन्सानी किरदार और जीवन को बिल्कुल साफ़–सुथरा और पाकीज़ा बना दे। इस प्रकार इन्सान खुद को और संसार को समझने के बाद अपनी मन्ज़िल को पहचान कर खुदा के रास्ते और उसकी तलाश में निकल खड़ा होता है।

सच्चाई यह है कि रोज़ा अपने अन्दर और खुदा तक सफ़र करने की एक रिहर्सल है और एक महीने इस रिहर्सल को करने के बाद इन्सान को साल भर इसी सफ़र को आगे बढ़ाना है।

(5) दुश्मन की पहचान

यह एक ऐसा सफ़र है जिसमें एक बहुत ही शक्तिशाली, भयानक

और दिखाई न देने वाला दुश्मन भी साथ–साथ रहता है जिसने ख़ुदा की इज़्ज़त की क़सम खाकर एलान किया है कि सिराते मुस्तक़ीम पर बैठकर इस रास्ते पर चलने वालों को बहकायेगा और गुमराह करेगा :

"मैं तेरे सीधे रास्ते पर बैठ जाऊँगा। उसके बाद सामने, पीछे और दायें–बायें से आऊँगा" (सूरए आराफ़/16,17)

इसलिए ऐसे दुश्मन की सही पहचान के बिना इन्सान इस सफ़र को पूरा नहीं कर सकता क्योंकि यह एक ऐसा दुश्मन है जिसका सबसे बड़ा हथियार ख़ुद इन्सान के अन्दर पाया जाता है:

"तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन ख़ुद तुम्हारा नफ़्स है जो तुम्हारे अन्दर मौजूद है।" (बिहार, V-70, Pg.-64)

यह शैतान का सबसे बड़ा हथियार है और अगर इन्सान अपने बाहर देखे तो इस शैतान की फ़ौज ही फ़ौज बाहर की दुनिया में बिखरी नज़र आयेगी जिनमें इन्सान और जिन्नात दोनों शामिल हैं :

مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ

वह जिन्नात में से हों या इन्सानों में से। (सूरए नास/6)

आज शैतानी शक्तियों ने मीडिया, सेटेलाइट, इन्टरनेट और यूरोपी कल्चर के द्वारा इन्सान से उसके परफ़ैक्शन का रास्ता छीन लिया है। आज का इन्सान अच्छी तरह इस बात का एहसास कर रहा है कि इन्टरनेट की आज की नस्लों यानी हमारे बच्चों में Human Values, अख़लाक़ और नेकियों का अता–पता दूर–दूर तक नहीं है जैसे "ग़ैरत" एक Value है जो इन्सान के परफ़ैक्शन में बहुत असर अन्दाज़ होती है लेकिन एक नौजवान जिसने अपनी सारी रात इन्टरनेट की Porn

Websites में गुज़ारी हो उसे अगर अगली सुबह में इराक़ की अबूग़रेब जेल की तस्वीरें दिखाई जाएँ तो उसे ज़रा सी भी ग़ैरत नहीं आयेगी जबकि इन्सानी ग़ैरत का स्टैण्डर्ड यह है कि अमीरे शाम मुआविया की फ़ौज ने यमन में एक यहूदी औरत के पैरों से पाज़ेब को उतार लिया था जिस पर इमाम अली (अ0) ने फ़रमाया था कि अगर इस अमल पर इन्सान ग़ैरत से मर जाये तो यह उसका हक़ है। (नहजुल बलाग़ः, खुतबा/27)

यहीं से अब हम दूसरे सवाल की तरफ़ बढ़ते हैं कि क्या रोज़ा इन्सान को कमज़ोर करता है?

कमज़ोरी या ताक़त

यह भी सही है कि रोज़ा कुछ लोगों के लिए शारीरिक कमज़ोरी का कारण बनता है लेकिन जिस्मानी कमज़ोरी इस बात को सिद्ध नहीं करती है कि इससे इन्सान भी कमज़ोर हो जाए बल्कि हो सकता है कि इस जिस्मानी कमज़ोरी के होते हुए इन्सान अपने इरादे और हिम्मत को इतना शक्तिशाली बना ले कि यह जिस्मानी कमज़ोरी उसके इरादे और हिम्मत के आगे कोई रूकावट खड़ी न कर सके क्योंकि यह बात Scientific और इतिहासिक तजुर्बों के द्वारा साबित हो चुकी है कि मज़बूत इरादे और हिम्मत के आगे शारीरिक थकावट, कमज़ोरी या सुस्ती कोई रूकावट खड़ी नहीं कर सकती। साथ ही साथ यह भी तय है कि बदन कितना ही मज़बूत क्यों ना हो, अगर इरादा और हिम्मत कमज़ोर हो तो इन्सान कोई बड़ा काम नहीं कर सकता बल्कि दूसरे लोगों से पिछड़ जाता है। इसलिए हो सकता है कि कुछ लोगों के लिए रोज़ा कुछ देर

के लिए कमज़ोरी का कारण बन जाए लेकिन दूसरी ओर यही रोज़ा इन्सान के अन्दर सब्र, बर्दाश्त करने की शक्ति, हिम्मत और इरादे को कूट–कूट कर भर देता है। इन रूहानी शक्तियों के फलने–फूलने के बाद जिस्मानी कमज़ोरी किसी भी तरह की कोई रूकावट खड़ी नहीं कर सकती क्योंकि इन्सान की पवित्र रूह उसकी जिस्मानी कमज़ोरी को अपने क़ाबू में कर लेती है और ऐसा भी उस वक़्त है जब हम यह मान लें कि रोज़ा रखने से शारीरिक कमज़ोरी पैदा होती है वरना सच यह है कि रोज़े से जिस्म कमज़ोर नहीं बल्कि मज़बूत और बहुत सी बीमारियों से सुरक्षित हो जाता है।

यहीं से हमें **तीसरे और चौथे सवाल का जवाब** भी मिल जाता है और वह यह कि हम ने माना कि खाना–पीना शरीर की आवश्यकता है और आम हालतों में भूख–प्यास का बर्दाश्त करना बहुत कठिन होता है लेकिन ऊपर बताये गये मक़सद और फ़ायदे साथ ही आगे लिखे जाने वाले बड़े–बड़े फ़ायदों और हिकमतों के कारण यह कठिन चीज़ भी इन्सान के लिए आसान, मज़ेदार और मनपसन्द बन जाती है यहाँ तक कि वह रोज़े का आशिक़ हो जाता है जिस प्रकार इमाम हुसैन (अ0) ने नमाज़ के लिए शबे आशूर फ़रमाया था कि मैं नमाज़ का आशिक़ हूँ। (मक़तलुल हुसैन मुक़र्रम, Pg.-232)

रोज़े के इन बड़े–बड़े फ़ायदों को देखते हुए इन्सान बड़ी आसानी से और खुशी–खुशी अपने हाथों से कमाई हुई हलाल रोज़ी–रोटी और बहुत सी नेअ्मतों को अपने ऊपर उसी तरह हराम कर लेता है जिस तरह एक डाक्टर के कहने पर वह बहुत सी चीज़ों को अपने ऊपर हराम

कर लेता है यहां तक कि अगर ज़रूरी हो जाए तो वह आप्रेशन और अपने किसी भाग को कटवाने पर भी तैयार हो जाता है बल्कि इसके लिए डाक्टर को बड़ी से बड़ी रक़म देकर बाद में उसका शुक्रिया भी अदा करता है।

रोज़े में हलाल चीज़ों के हराम होने का कारण और मक़सद वही है जो पहले बयान हो चुका है यानी जीवन के Daily Routine से आज़ादी ताकि इन्सान अपनी रोज़ाना की आदतों की क़ैद से निकलकर रूहानी और Metaphysical दुनिया की ओर देखने का वक़्त भी निकाल सके।

आज़ादी या क़ैद

पाचवाँ सवाल यह था कि रोज़े में इन्सान को बहुत सी पाबन्दियां झेलना पड़ती हैं और यह सही भी है लेकिन यह भी सही है कि इन्सान उस समय तक किसी ऊँची मन्ज़िल तक नहीं पहुँच सकता जब तक कुछ चीज़ों की पाबन्दी न कर ले। पाबन्दियाँ कठिन ही सही लेकिन इनके बिना परफैक्शन और मन्ज़िल नहीं मिल सकती।

किसी भी स्टूडेण्ट, स्कॉलर या फ़नकार को अपनी मन्ज़िल तक पहुंचने के लिए बहुत सी पाबन्दियों को झेलना पड़ता है जिनमें से सबसे बड़ी पाबन्दी वक़्त की पाबन्दी है। इसके अतिरिक्त बहुत सी दूसरी हलाल चीज़ों को भी अपने ऊपर हराम करना पड़ता है वरना कामयाबी नहीं मिलती।

ख़ानदान, क़बीले, शहर, मुल्क और दुनिया में अम्न व अमान को स्थापित करने के लिए इन्सान को अपने ऊपर ख़ानदानी, शहरी National और International बहुत से क़ानूनों की पाबन्दी को बर्दाश्त करना पड़ता है। इसी तरह दीन व शरीअत के एहकाम भी एक प्रकार की पाबन्दी है जिसके दो कारण हैं :

(1) इन्सान को व्यक्तिगत व Psychological मुश्किलों और सामाजिक बदअम्नी से महफ़ूज़ रखना।

(2) इन्सान के अन्दर रूहानी व शारीरिक और व्यक्तिगत व सामाजिक Perfection पैदा करना और उसे ऊँचाईयों तक ले जाना।

रोज़ा भी दूसरे दीनी एहकाम के समान एक पाबन्दी ज़रूर है पर यह एक ऐसी पाबन्दी है जो एक तरफ़ इन्सान को कामयाबी और ऊँचाईयों तक ले जाती है और दूसरी ओर उसको बहुत सी बीमारियों, बुराईयों, कमियों और गुनाहों से आज़ाद करा देती है।

इन्सान के लिए सबसे बड़ी क़ैद उसकी दुनियावी ख़ाहिशें हैं और हक़ीक़त में आज़ाद इन्सान वही है जिसने अपने आपको इस क़ैद से आज़ाद करा लिया हो।

हज़रत अली (अ0) फ़रमाते हैं :–

"जो अपनी ख़ाहिशों को छोड़ने में कामयाब हो जाए वही आज़ाद इन्सान है।" (बिहार, V-74, Pg.-239)

और रोज़ा अगर अपनी सारी शर्तों के साथ रखा जाए तो इसका सबसे बड़ा फ़ायदा यह होता है कि यह इन्सान को ख़ाहिशों से आज़ाद करके ऊंची–ऊंची उड़ानों और कामयाबियों की ओर मोड़ देता है।

फ़ितरत की ज़रूरतें

एक सवाल इन्सान के सामने बार–बार सर उठाता है और वह यह कि दीन और दीन के एहकाम अगर नेचरल हैं, जैसा कि दीन का

दावा भी यही है, तो फिर इन्सान को दीनदारी और दीनी एहकाम पर अमल करने में मुश्किल का एहसास क्यों होता है ख़ास कर रोज़े में इस का एहसास और भी बढ़ जाता है जबकि नेचरल चीज़ें इन्सान को कभी बुरी और मुश्किल नहीं लगतीं।

इस सवाल के जवाब में दो बातें ख़ास हैं :-

(1) नेचरल चीज़ें इन्सान को उस समय तक अच्छी लगती हैं जब तक उसने अपनी फ़ितरत पर ऐसी चीज़ें ना मढ़ ली हों जो नेचरल न हों जैसे कि खुदा की इबादत इन्सान की फ़ितरत का हिस्सा है लेकिन अगर बार-बार या हर वक़्त खुदा को छोड़कर दूसरी चीज़ों या लोगों से दिल लगा लिया जाए तो इन्सान की फ़ितरत कमज़ोर होती जाती है बल्कि एक समय वह आता है जब उसकी फ़ितरत बिल्कुल मर जाती है और अपना कोई असर नहीं दिखाती। यह वह समय और हालत होती है कि जहां से इन्सान का अपनी फ़ितरत तक पलटना काफ़ी हद तक नामुमकिन हो जाता है। इसलिए कुरआन ने रसूल (स0) को मना किया था कि ऐसे लोगों के लिए परेशान न हो क्योंकि यह ईमान लाने वाले नहीं हैं।

"سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْن"

इन लोगों के लिए सब बराबर है। आप इन्हें डराएँ या न डराएँ, यह ईमान लाने वाले नहीं हैं। (सूरए ब-क़-रः/6)

जिस प्रकार अगर अच्छे स्वभाव और अच्छी आदतों पर बुरे स्वभाव और बुरी आदतों को थोपा जाने लगे तो आहिस्ता-आहिस्ता अच्छा स्वभाव कमज़ोर पड़ने लगता है और अस्वाभाविक चीज़ को सिर्फ़ स्वीकार ही नहीं कर

लेता बल्कि उसे पसन्द भी करने लगता है और इसी में उसको मज़ा भी आता है जैसे सिग्रेट, शराब या इसी प्रकार की दूसरी नशीली चीज़े जिनके अस्वाभाविक होने का प्रमाण और दलील यह है कि इन्सान जब पहली बार इन्हें इस्तेमाल करता है तो उसे यह बहुत बुरी लगती हैं लेकिन कुछ ही दिनों के बाद उसे इन्हीं में मज़ा आने लगता है।

(2) दूसरी बात यह है कि दीन, फ़ितरत के अनुरूप है न कि स्वभाव के लेकिन क्योंकि हमारे मन में फ़ितरत और स्वभाव के मायने आपस में गुडमुड हो गये हैं इसलिए हम फ़ितरी चीज़ों को भी स्वाभाविक चीज़ों के आईने में देखते हैं जबकि स्वभाविक आवश्यकताएँ, यानी इन्सान की माद्दी और भौतिक आवश्यकताएँ, और फ़ितरी आवश्यकताएँ यानी इन्सानी रूह से सम्बन्धित और रूहानी आवश्यकताएँ। इन्सान के अन्दर क्योंकि भौतिक, माद्दी और हैवानी पहलू भी पाया जाता है इसलिए उसके अन्दर भौतिक, माद्दी और हैवानी सिफ़तें और Qualities भी पाई जाती हैं जैसे खाना पीना, सोना, आराम करना वगैरा। यह वह चीज़ें हैं जो इन्सान के जिस्म से सम्बन्धित हैं और हो सकता है कि इनमें से अधिकतर को पूरा करते समय इन्सान की फ़ितरत और रूह को गहरी चोट लगती हो जिससे बेहद तकलीफ़ भी होती हो।

इसके विपरीत इन्सान जब अपनी रूहानी ज़रूरतों को पूरा करता है जैसे पढ़ता–लिखता है, अपनी मन्ज़िल तक पहुंचने के लिए सख़्त मेहनत करता है, अपने पालने वाले ख़ुदा की इबादत करता है तो जिस्म को तो बहुत तकलीफ़ और परेशानी उठाना पड़ती है लेकिन उसकी रूह को इसमें बड़ा मज़ा आता है और सुकून मिलता है और यह

मज़ा ऊपर वाले जिस्मानी और भौतिक मज़े से कहीं अच्छा और ख़ूबसूरत होता है।

इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि इन्सान अपने जिस्म की ज़रूरतों को पूरा ही न करे और खुद को मौत के मुँह में ढकेल दे। ख़ास बात यह है कि इन्सान अपने अन्दर के कमालात और गुणों को समझे और जाने कि कौन किस पर भारी है, जिस्मानी ज़रूरतें या रूहानी ज़रूरतें।

अगर वास्तविक तौर पर देखा जाए तो रोज़ा इन्सान के अन्दर जिस्मानी सिफ़तों और Qualities को कम और कमज़ोर करके रूहानी Qualities और पहलू को मज़बूत करने का अभ्यास कराता है। जिस इन्सान का इरादा मज़बूत होता है वह अपने वास्तविक रूहानी फ़ैक्टर को भौतिक और जिस्मानी पहलुओं के मुक़ाबले में कमज़ोर नहीं पड़ने देता क्योंकि अपनी जिस्मानी ज़रूरतों में क़ैद इन्सान अपनी ज़िन्दगी में कभी भी कोई बड़ा क़दम नहीं उठा सकता और न ही कामयाब हो सकता है।

आख़री सवाल

यहां तक आने के बाद अब आख़री सवाल का जवाब बहुत आसान हो गया है कि अगर इन्सान रोज़ा न रखे तो उसके अन्दर कौन सी कमी रह जाएगी। यह सवाल बिल्कुल उसी तरह है जैसे कोई कहे कि खाना न खाने या पानी न पीने, साँस न लेने या न सोने से इन्सान को क्या परेशानी और मुश्किल हो सकती है?

वास्तविक रूप में इन्सान रोज़ा न रखने से उन सारे फ़ायदों और हिकमतों से वंचित हो जाता है जो रोज़े के अन्दर रखे गये हैं, जिस

तरह खाने–पीने के बिना इन्सान अपनी ज़िन्दगी से हाथ धो बैठता है उसी प्रकार दीन और दीनी एहकाम को छोड़ देने से इन्सान देखने में तो ज़िन्दा ही नज़र आता है लेकिन उसकी रूहानी मौत हो जाती है :

(सूरए जासिया/21) "سواء محیاهم و مماتهم"

(कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी मौत और ज़िन्दगी खुदा के नज़दीक बराबर है।)

अब तक रोज़े के कुछ फ़ायदे और हिकमतें बयान की गई हैं लेकिन यह फ़ायदे और हिकमतें इतनी ज़्यादा हैं कि उन्हें इस Booklet में नहीं समेटा जा सकता और दूसरे यह कि इसके सारे फ़ायदों और हिकमतों को हर इन्सान जानता भी नहीं है। इसलिए अब यहाँ पर कुछ और ख़ास हिकमतों को संक्षेप में पेश किया जा रहा है ताकि यह बहस किसी हद तक पूरी हो सके।

तज़कियए नफ़्स

तज़किया किसी भी चीज़ को पाक–साफ करने को कहते हैं और तज़कियए नफ़्स का मतलब होता है कि इन्सान अपने आपको हर तरह की बुराईयों और गुनाह से दूर कर ले।

तज़किया सारी इबादतों की बुनियाद है और खुदा इन्सान को ज़िन्दगी के हर हिस्से में पाक–साफ़ और पाकीज़ा देखना चाहता है :–

"وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ"

"खुदा पाकीज़ा लोगों से मुहब्बत करता है।" (सूरए तौबः/108)

रमज़ान के महीने में तज़कियए नफ़्स का दायरा और बड़ा हो जाता है। इस मुबारक महीने में इन्सान एक ख़ास तैयारी के साथ अपने

नफ़्स के तज़किये और पाकीज़गी के लिए कोशिश करता है। पाकीज़गी रोज़े के उन ख़ास फ़ायदों और हिकमतों में से है जिनके द्वारा न सिर्फ़ रोज़ा बल्कि रोज़ेदार और उसके सारे आमाल और इबादतों में वज़न पैदा हो जाता है।

रमज़ान के मुबारक महीने में इन्सान को सबसे बड़ा काम यह करना होता है कि वह सबसे पहले अपने नफ़्स को पाक करे यानी बुराईयों और गुनाहों से बचे क्योंकि इस पाकीज़गी के बिना न तो भूख–प्यास के अलावा रोज़ों से कुछ लाभ होगा और न कुरआन की तिलावत के थोड़े से सवाब के अलावा कुछ मिलेगा और न ही थकावट और बोरियत के अलावा शबे क़द्र से कुछ फ़ायदा होगा।

तज़किया और उसके तरीक़े

तज़किया कोई ऐसी चीज़ नहीं कि इन्सान सोच ले कि मैं पाक होना चाहता हूँ और वह पाक हो जाए बल्कि इसके लिए इन्सान को कई मन्ज़िलों से गुज़रना पड़ता है।

कपड़ों और बदन की पाकीज़गी

पाकीज़गी और तज़किये का सबसे पहला और आसान रास्ता यह है कि इन्सान अपने लिबास और जिस्म को पाक–साफ़ रखे। ख़ास बात यह है कि इस्लाम ने इसी सबसे पहली चीज़ के लिए बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है यहाँ तक कि सफ़ाई को आधा ईमान क़रार दिया है क्योंकि यह तज़किये के एक लम्बे सफ़र की शुरूआत है।

हवास (Senses) की पाकीज़गी

Senses के तज़किये का मतलब इन्सान की आँख, कान, जुबान और दूसरे Senses का तज़किया है ताकि उसकी आँखे "**ख़ियानत करने वाली आँखें**"(मीज़ानुल हिकमह, V-4, हदीस–10925) न कहलाएँ, उसके कान जब खुदा की किताब या ज़िक्र को सुन रहे हों तो गुनाहों में डूबे न हों क्योंकि रमज़ान के महीने में खुदा की तरफ़ से इन्सान को दावत दी जाती है लेकिन गुनाहों में डूबे हुए कान इस दावत को नहीं सुन सकते। इसी तरह जुबान है कि इन्सान को इसका ख़याल रखना चाहिए और इसका भी तज़किया करना चाहिए ताकि झूठ, चापलूसी, ग़ीबत, गालियों, और ऐसी बातों में डूबी हुई जुबान पर खुदा का नाम न आए और ऐसी जुबान से कुरआन की तिलावत न की जाए, दुआऐं न पढ़ी जाएँ क्योंकि कोई भी कभी इस बात पर तैयार नहीं हो सकता कि एक बहुत पाक–साफ़ और पाकीज़ा चीज़ को किसी गन्दे और नजिस हाथ में पकड़ा दे।

इस बारे मे जनाबे फ़ातिमा ज़हरा (स0) फ़रमाती हैं :–

"रोज़ेदार अपने उस रोज़े का क्या करेगा जिसमें वह अपनी आँख, कान, जुबान और दूसरे भागों को क़ाबू में न रख सके।"

(दआएमुल इस्लाम, V-1, Pg.-268)

कल्पनाओं की पाकीज़गी

ख़यालात और कल्पनाओं का पाक–साफ़ न होना इन्सान की

एक बहुत बड़ी बुराई है। गन्दे ख़यालों का होना इन्सान के इल्म और कमाल के रास्ते में एक बहुत बड़ी रूकावट बन जाता है इसलिए ज़रूरी है कि वह अपने ख़यालात को पाक करे। अगर इन्सान अपनी कल्पनाओं की पाकीज़गी का अन्दाज़ा लगाना चाहता है तो उसे चाहिए कि यह देखे कि सोते हुए अपने ख़ाबों में क्या देखता है क्योंकि इस हालत में Senses के सो जाने के बाद ख़यालात वाला हिस्सा ज़्यादा जागरुक हो जाता है और दिन भर की कल्पनाओं को ख़्वाब मे चलता–फिरता दिखाता है।

विचारों की पाकीज़गी

यह कल्पनाओं व ख़यालों को पाक–साफ़ करने से भी बड़ी और कठिन चीज़ है। इन्सान खुदा की मदद के बिना अपने विचारों को पाक नहीं कर सकता और यह तो मालूम ही है कि मुश्किल जितनी बड़ी होती है उसी के अनुरूप खुदा से मदद मांगने की ज़रूरत भी होती है। उधर शैतान हमेशा हमारे विचारों पर हमले करने की कोशिश करता रहता है

يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ

शैतान लोगों के दिलों में वसवसे डालता रहता है। (सूरए नास/5)

इसी तरह इन्सान पर **"शैतानी वही"** का सिलसिला भी जारी रहता है :

إِنَّ الشَّيَاطِيْنَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ (सूरए अन्आम/121)

ताकि शैतान इन्सान को गुमराह कर दे और उसके पाकीज़ा विचारों और सोच को ग़लत रास्ते पर डाल दे। मुश्किल यह होती है कि

अगर इन्सान के विचार और उसकी सोच ग़लत रास्ते पर चल पड़े तो उसका दीन–धर्म और ऐतेक़ाद सब तहस–नहस हो जाते हैं जिसका एक उदाहरण यह है कि विचारों और सोच के ग़लत हो जाने के कारण हज़रत अली (अ0) के बड़े–बड़े और बहुत मुक़द्दस सहाबी और सिपाही सिफ़्फ़ीन की जंग में खुद आपके मुक़ाबले में खड़े हो गये थे। इसीलिए इस शैतानी चाल से बचने के लिए खुदा ने हमें जो रास्ता बताया है वह यह है कि अपने पालने वाले से दुआ माँगो कि वह तुम्हें इन शैतानी चालों से महफ़ूज़ रखे :

जैसा कि सूरए नास में इन्सानों और जिन्नातों के शर से बचने के लिए अल्लाह से पनाह माँगी गई है।

قُلْ اَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ مَلِكِ النَّاسِ اِلٰهِ النَّاسِ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

(सूरए नास/1–4)

क़ल्ब का तज़किया

यहां क़ल्ब का मतलब हमारे धड़कते हुए दिल से नहीं हैं बल्कि इसका तअल्लुक़ इन्सान की हक़ीक़त और रूह से है। ऊपर जो बातें पेश की गई हैं अगर इन्सान उन पर अमल कर ले और अपने जीवन को पाक–साफ़ और पाको पाकीज़ा बना ले तो उसका दिल खुदा का अर्श और खुदा का घर बन जाता है :

اَلْقَلْبُ عَرْشُ الرَّحْمٰنِ   इन्सान का क़ल्ब खुदा का अर्श है।

اَلْقَلْبُ حَرَمُ اللهِ وَ لَا تُسْكِنْ فِى حَرَمِ اللهِ غَيْرَه

यानी तुम्हारा दिल खुदा का घर है इसलिए इसमें किसी और को मत रहने दो।

तक़्वा

रोज़े का एक बहुत ख़ास फ़ायदा और हिकमत "तक़्वा" है बल्कि अगर यूँ कहा जाये कि रोज़े का अस्ल मक़सद यही "तक़्वा" है तो भी ग़लत न होगा। शायद इसीलिए कुरआन ने जब रोज़े का मक़सद बयान किया तो यही कहा :–

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

"ऐ ईमान वालो! दूसरी उम्मतों की तरह तुम्हारे ऊपर भी रोज़ा वाजिब कर दिया गया है कि शायद तुम मुत्तक़ी बन जाओ।"(सूरए बक़र: / 183)

लेकिन "तक़्वा" कुरआन और इस्लामी शिक्षाओं में से एक ऐसा लफ़्ज़ है जो आज हमारे बीच बहुत मज़लूम हो गया है यानी इसके अर्थ को इसके अस्ल अर्थ से इतना बदल दिया गया है कि अब तक़्वा को इसके बिल्कुल उल्टे मायनों में इस्तिमाल किया जाने लगा है।

मुस्लिम समाज पर ईसाईयों, हिन्दुओं और यहूदी कल्चर और विचारधारा का असर यह हुआ कि "तक़्वा" को बिल्कुल बेजान बना दिया गया और इसकी रूह निकाल दी गई। इसी तरह हर उस आदमी को "मुत्तक़ी" या परहेज़गार कहा जाने लगा जो सारी दुनिया से बेख़बर, समाज से अलग–थलग, इन्सानों से दूर और दोस्त–दुश्मन, अपने पराये सबसे लापरवाह होकर एक सीधे–सादे आदमी की तरह खुदा की बस इबादत करता रहे। जबकि यह तक़्वा उस तक़्वे से बिल्कुल अलग बल्कि उल्टा है जो रसूले खुदा (स0), अमीरूल मोमिनीन (अ0) और दूसरे इमामों के पास था। इस्लाम में तक़्वा समाज को छोड़कर मस्जिद में बैठ

जाने का नाम नहीं है बल्कि तक़्वे के मतलब में जीवन के हर हिस्से में हर घड़ी कुछ न कुछ करते रहने की ललक, आगे बढ़ने की ललक, उन्नति की ललक, इबादत की ललक, अच्छे कामों की ललक, दूसरों की मदद करने और उनकी मुश्किलों को दूर करने की ललक सब ही कुछ आता है, न कि सब कुछ छोड़–छाड़ कर बस मुसल्ले पर बैठ जाना।

तक़्वा के माने होते हैं ढाल यानी शील्ड के। इन्सान का मक़सद यह है कि उसे अपने ईमान और अमल के सहारे हर पल उन्नति करना है, एक रूहानी सफ़र करना है और अपनी मन्ज़िल तक पहुँचना है। यह वह रास्ता है जहाँ शैतान यह क़सम खाकर बैठा हुआ है कि वह इन्सान को सही रास्ते से बहकाएगा इसलिए शैतान के हमलों से बचने के लिए एक आसमानी ढाल की ज़रूरत थी और तक़्वा उसी ढाल का नाम है। तक़्वा यानी इन्सान के अन्दर एक ऐसा रक्षात्मक सिस्टम जो शैतान के हर हमले को बेकार करके इन्सान को उसकी मन्ज़िल तक पहुँचा दे।

हज़रत अली (अ0) फ़रमाते हैं :–

"तक़्वा आज ढाल है और कल जन्नत तक ले जाने वाला रास्ता है।" (नहजुल बलाग़:, ख़ुतबा / 189)

तक़्वा के एक निगेटिव मानी हैं और एक पॉज़िटिव। निगेटिव यह कि चुँकि अपने जीवन को पाक–साफ़ रखने के लिए ख़ुद को शैतान से बचाना है इसलिए ऐसी जगह चल कर रहा जाए जहाँ तक शैतान न पहुंच सकता हो। इस विचारधारा के तहत यह लोग अपनी घरेलू और समाजी सारी ज़िम्मेदारियों को छोड़–छाड़ कर किसी जंगल के एक कोने

में दुबक जाते हैं और फ़र्ज़ यह कर लेते हैं कि वहाँ तक शैतान नहीं पहुँच सकता जबकि इस तरह हारा हुआ और ज़िन्दगी से भागा हुआ इन्सान ज़्यादा शैतान के क़ाबू में होता है।

इस्लाम और कुरआन के अनुसार पॉज़िटिव तक़्वा वह है जो इन्सान से दुश्मन के सामने से भागने के लिए न कहे बल्कि उसे दुश्मन पर क़ाबू पाने के लिए तैयार करे। इन्सान के अन्दर ऐसी रूहानी शक्ति और नज़र पैदा कर दे जो उसे समाज के बीचो–बीच रहते हुए भी शैतान से महफ़ूज़ रखे और न सिर्फ़ ऐसा इन्सान खुद महफ़ूज़ रहे बल्कि दूसरों की निजात के लिए भी कोशिश करता रहे।

मुश्किलों पर क़ाबू

जैसा कि ऊपर बयान किया गया है, तक़्वा इन्सान के अन्दर पैदा होने वाली उस रूहानी शक्ति का नाम है जो न सिर्फ़ उसको बुराईयों और गुनाहों से महफ़ूज़ रखती है बल्कि इन्सान इसी शक्ति की मदद से अपने आम जीवन की रोज़ाना की मुश्किलों पर भी क़ाबू पा लेता है।

हम जिस दुनिया में अपना जीवन गुज़ार रहे हैं वह भौतिक दुनिया है जिसकी बुनियाद matter पर रखी गई है और यह वह दुनिया है जहाँ एक तरफ़ खुद नेचर की अपनी कुछ विशेषताएँ और ज़रूरतें हैं और दूसरी ओर इन्सान की अपनी ख़ाहिशें, जज़्बात और ज़रूरतें हैं और इन दोनों में से हर एक अपनी–अपनी ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है। इसलिए इन्सान को तरह–तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इन मुश्किलों की सख़्ती और अपनी कमज़ोरी को देखते हुए इन्सान

को एक ऐसी शक्ति से खुद को जोड़ने की ज़रूरत है जिसकी मदद से वह अपनी हर मुश्किल पर क़ाबू पा सके। इसके लिए इन्सान अलग अलग शक्तियों को आज़माता है लेकिन उसे हमेशा नाकामी ही हाथ आती है क्योंकि बहरहाल उसकी इन मुश्किलों का हल दुनिया की किसी शक्ति के पास नहीं है और अगर है तो सिर्फ़ और सिर्फ़ उस शक्ति के पास जिसका नाम खुदा है और जब वह खुदा की ओर रुख़ करता है और उससे मदद चाहता है तो खुदा वन्दे आलम उसकी चमत्कारिक मदद करने के बजाए उसके हाथ में मदद का एक फ़ार्मूला और क़ानून रख देता है ताकि वह किसी एक ख़ास मुश्किल पर क़ाबू पाने के बजाए ज़िन्दगी की हर मुश्किल पर काबू पाता रहे। इसीलिए इरशाद फ़रमायाः–

وَاسْتَعِيْنُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوة

"सब्र और नमाज़ के ज़रिये मदद माँगो।" (सूरए ब–क़–रः/45)

नमाज़ से इसलिए क्योंकि बड़ी–बड़ी शक्तियों से सम्पर्क छोटी–छोटी मुश्किलों को दूर कर देता है और खुदा से बड़ी कोई शक्ति नहीं है जिससे क़रीब होने का बेहतरीन ज़रीअः नमाज़ है और सब्र से इसलिए क्योंकि सब्र से इन्सान के अन्दर शक्ति, मज़बूती और दृढ़ता पैदा होती है। यह मज़बूती कभी ज़ुल्म के मुक़ाबले में होती है, कभी मुश्किलों के मुक़ाबले में और कभी रूहानी कमालात और अपनी मन्ज़िल व कामयाबी को हासिल करने में। रोज़े का एक फ़ायदा यह भी है कि यह इन्सान के अन्दर सब्र और मज़बूती पैदा करता है।

ख़ुदा के फ़ज़्लो करम के दस्तरख़ान पर

हदीसों में रमज़ान के मुबारक महीने को "शहरूल्लाह" यानी ख़ुदा का महीना बताया गया है। रसूले इस्लाम (स0) फ़रमाते हैं :–

"लोगो! ख़ुदा का महीना आ गया है और इस महीने में तुम्हें ख़ुदा के दस्तरख़ान पर बुलाया गया है।" (ख़ुतबए शअ्बानियः)

ख़ुदा का करम इतना ज़्यादा फ़ैला हुआ है कि इन्सान उसकी अनगिनत नेअ्मतें इस्तेमाल करता है और एहसास भी नहीं कर पाता कि यह नेअ्मतें कहाँ से आ रही हैं यहां तक कि अपनी जिहालत की वजह से इन नेअ्मतों को भेजने वाला किसी दूसरे को समझ बैठता है और उसी का शुक्रिया अदा करता रहता है। इन्सान अपने करीम ख़ुदा से इतना ग़ाफ़िल होता है कि बीच के माध्यमों को तो पहचानता है लेकिन नेअ्मत के हक़ीक़ी और अस्ल **Resource** की उसको कोई ख़बर नहीं होती जैसे बारिश होने पर कोई बादलों का तो शुक्रिया अदा करे लेकिन समन्दर को भूल जाये।

इस मुबारक महीने में इन्सान ख़ुदा का मेहमान होता है और सामने की बात है कि मेज़बान अपने मेहमान के सामने वही पेश करता है जो उसके पास होता है। ख़ुदा के ख़ज़ाने में, ख़राब, गन्दी, छोटी–मोटी और बेकार चीज़े नहीं हैं बल्कि उसके ख़ज़ाने में जो चीज़ भरी पड़ी है वह है कमाल, रूहानी और दुनियावी कमाल और कामियाबियाँ और वह ऐसा मेज़बान भी नहीं है जिसके यहां किसी भी तरह की कन्जूसी का ज़रा सा असर भी पाया जाता हो। इसलिए इस मुबारक महीने में इन्सान जितने

कमालात, कामियाबियाँ और ऊंचाईयाँ चाहता है खुदा के इस दस्तरखान से चुन सकता है।

कुरआन और इन्सान

اَلْقُرْآنُ مَأْدُبَةُ اللهِ

ख़ुदा के फ़ज़्लो करम का दस्तरख़ान कुरआन है। (बिहार, V-92, Pg.-19)

इस किताब में इन्सानी कमालात और **Human Values** के सारे नुस्ख़े पाये जाते हैं। यह किताब इसी महीने में नाज़िल हुई थी यानी इस दस्तरख़ान को इसी महीने में बिछाया गया था ताकि मेहमानों की मेज़बानी के लिए दावत का सामान उस पर लगा दिया जाये। साथ ही जिस रात में कुरआन नाज़िल हुआ यानी शबे क़द्र में सारे इन्सानों के बारे में साल भर के फ़ैसले भी होते हैं और इसी रात में इस दुनिया में पाई जाने वाली हर चीज़ की तक़दीर भी लिखी जाती है। इसलिए इस रात में इन्सान के पास यह सुनहरा मौक़ा होता है कि वह अपने हाथों से अपनी तक़दीर को लिख ले और जो कुछ चाहता है ख़ुदा के दस्तरख़ान से उठा ले।

महबूब की चौखट पर

मेज़बान और मेहमान में सबसे अच्छा रिश्ता इश्क़ और मुहब्बत का रिश्ता होता है और ऐसी मेहमानी और मेज़बानी के सबसे ख़ूबसूरत और हसीन पल वह होते हैं जब आशिक़ और माशूक़ की एक दूसरे के साथ मुलाक़ात होती है। इश्क़ की मुलाक़ात में असली ख़ाहिश ख़ुद माशूक़ होता है न कि उसकी दी हुई नेअ्मतें और इस मुलाक़ात में आशिक़ और

माशूक़ की सबसे बड़ी चाहत यह होती है कि जितना ज़्यादा हो सके एक दूसरे के साथ बातें करते रहें।

रोज़े का सबसे बड़ा और ख़ास राज़, मक़सद और हिकमत अपने माशूक़ यानी पालने वाले खुदा से मुलाक़ात करना और बातें करना है। यह इन्सानियत का सबसे ऊँचा मुक़ाम और इन्सान के लिए सबसे प्यारे पल हैं। इन मीठे–मीठे पलों तक पहुंचने के लिए उसने रोज़े के ज़रिये अपने आपको सारी हैवानी और जिस्मानी ख़ाहिशों से पाक किया है। रोज़ा रखकर अब वह ख़याली अय्याशी से आज़ाद हो चुका है, अब उसे झूठ बोलने या किसी की ग़ीबत या बुराई करने में मज़े के बजाय तकलीफ़ होती है, अब उसने अपनी आंखों, कानों और जुबान को हर बुराई से पाक–साफ़ कर लिया है अब वह खानों के ज़ायक़ों और मज़ों से ऊपर उठ चुका है क्योंकि अब उसे अपने महबूब से मुलाक़ात और उससे बातें करने में मज़ा आने लगा है।

हदीस में आया है, "रोज़ेदार को दो मौक़ों पर खुशी का एहसास होता है, एक इफ़्तार के वक़्त और दूसरे अपने परवरदिगार से मुलाक़ात के वक़्त।" (वसाएल, V-10, Pg.-400)

इफ़्तार के वक़्त इसलिए क्योंकि खुदा ने उसे तौफ़ीक़ दी और रोज़ा पूरा हो गया, मरीज़ नहीं हुआ, कोई सफ़र नहीं करना पड़ा, शैतान ने नहीं बहकाया और खुदा ने उसे किसी और काम में नहीं लगाया क्योंकि खुदा हर एक को अपनी बारगाह में आने की इजाज़त नहीं देता, वह जिन्हें अपनी बारगाह के लायक़ नहीं समझता उन्हें दूसरे कामों में लगा देता है, कभी परेशानियों और मुसीबतों में उलझा देता है तो कभी हद से ज़्यादा

नेअ्मतें देकर उन्हीं में मसरूफ कर देता है।

इसी तरह खुदा से मुलाक़ात के वक़्त खुशी इसलिए होती है क्योंकि यही एक इन्सान के लिये सबसे बड़ी नेअ्मत है।

अगर इन्सान इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि कुरआन खुदा का कलाम है और जब वह कुरआन पढ़ता है तो खुदा उससे कलाम कर रहा होता है, बात कर रहा होता है तो फिर वह कुरआन को सिर्फ़ सवाब के लिये नहीं पढ़ेगा बल्कि कुरआनी आयतों को अपने जीवन में ढालने का प्रयास करेगा।

इसी तरह अगर इन्सान इस बात को भी समझ ले कि दुआ करते वक़्त वह खुदा से बातें कर रहा होता है और खुदा बहुत क़रीब से उसकी दुआओं को सुनता है, *"और जब मेरा कोई बन्दा मुझसे किसी चीज़ का सवाल करता है तो मैं बहुत क़रीब से जवाब देता हूँ"* (सूरए बक़रः / 186) तो फिर वह खुदा की बारगाह में छोटी–छोटी और मामूली चीज़ें नहीं मांगेगा बल्कि वह चीज़ें माँगेगा जो उसके इतने ऊँचे मुक़ाम के अनुरूप होंगी और ऐसा भी हो सकता है कि वह कुछ माँगने के बजाये सिर्फ़ अपने परवरदिगार से बातें करने के लिए ही दुआ कर रहा हो, अगर कुछ माँग रहा हो तो खुदा से खुदा को ही माँग रहा हो क्योंकि अगर इन्सान को खुदा मिल जाये तो कुछ न होते हुए भी सब कुछ मिल जायेगा और अगर खुदा न मिला तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं मिलेगा।

مَا ذَا وَجَدَ مَنْ فَقَدَکَ وَ مَاالَّذِی فَقَدَ مَنْ وَجَدَکَ

"पालने वाले! उसने क्या पाया जिसने तुझे खो दिया और उसने क्या खोया जिसने तुझे पा लिया।" ....इमाम हुसैन (अ0)

माहे रमज़ान के आमाल

मुश्तरक आमाल

पहली क़िस्मः– वह आमाल जो इस महीने में हर रात व दिन अन्जाम दिये जाते हैं।

हर नमाज़े वाजिब के बाद इस दुआ को पढ़ना चाहियेः

يَاعَلِيُّ يَاعَظِيْمُ يَاغَفُوْرُ يَارَحِيْمُ اَنْتَ الرَّبُّ الْعَظِيْمُ الَّذِى لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ وَهٰذَا شَهْرٌ عَظَّمْتَهُ وَكَرَّمْتَهُ وَشَرَّفْتَهُ وَفَضَّلْتَهُ عَلَى
الشُّهُوْرِ وَهُوَ الشَّهْرُ الَّذِى فَرَضْتَ صِيَامَهُ عَلَىَّ وَهُوَ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِى اَنْزَلْتَ
فِيْهِ الْقُرْآنَ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ وَجَعَلْتَ فِيْهِ لَيْلَةَ
الْقَدْرِ وَجَعَلْتَهَا خَيْرًا مِنْ اَلْفِ شَهْرٍ فَيَاذَالْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْكَ مُنَّ عَلَىَّ بِفَكَاكِ
رَقَبَتِىْ مِنَ النَّارِ فِيْمَنْ تَمُنُّ عَلَيْهِ وَاَدْخِلْنِى الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

या अ़लीययु, या अ़ज़ीमु, या ग़फ़ूरू, या रहीम। अन्तर्रब्बुल अ़ज़ीमुल्लज़ी लै–स कमिस्लिही शैउन व हुवस्समीउ़ल बसीर। व हाज़ा शहरून अ़ज़्ज़म्तहू व कर्रम्तहू व शर्रफ़्तहू व फ़ज़्ज़ल्तहू अलश्शुहूर। व हुवश्शहरूल्लज़ी फ़रज़–त सियामहू अलै–य। व–हु–व शहरू र–म–ज़ानल्लज़ी अन्ज़ल–त फ़ीहिल कुरआन। हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम्मिनल हुदा वल फ़ुरक़ान। व–जअल्–त फ़ीहि लै–लतल क़द्रि

व–जअल्तहा ख़ैरम्मिन अल्फ़ि शह्र। फ़–याज़लमन्नि वला युमन्नु अलै–क मुन–न अलै–य बिफ़काकि र–क़ बती मिनन्नार। फ़ी मन तमुन्नु अलैहि व अद्ख़िलनिल जन्नः। बि रह़मति–क या अरह़मर्राहिमीन।

तर्जुमाः ऐ बुलन्द, ऐ अज़ीम, ऐ बख़्शने वाले, ऐ रहम करने वाले, तू अज़ीम रब है कि जिसके जैसा कोई नहीं और जो हर बात को सुनने वाला और हर चीज़ का देखने वाला है और यह वह महीना है जिसको तूने बुज़ुर्गी, करामत और शरफ़ व मंज़ेलत अ़ता की और दूसरे सारे महीनों पर फ़ज़ीलत दी है। ये वह महीना है जिसके रोज़े को तूने मुझ पर वाजिब किया है और ये ऐसा माहे रमज़ान है जिसमें तूने अपनी किताब क़ुरआन नाज़िल फ़रमाई है जो लोगों के लिए हिदायत की किताब है और जिसमें हिदायत की खुली दलीलें और हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाली निशानियां हैं, तूने इस महीने में शबे क़द्र क़रार दी और उसको हज़ार महीनों से अफ़ज़ल क़रार दिया। ऐ एहसान वाले ख़ुदा! जिस पर किसी ने एहसान नहीं किया, मुझे उन लोगों में क़रार दे कि जिन पर तूने एहसान किया, जहन्नम की आग से आज़ाद करके एहसान फ़रमा और मुझे अपनी रह़मत के ज़रिए जन्नत में दाख़िल फ़रमा, ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

हज़रत रसूले ख़ुदा (स.) ने फ़रमाया हैः

जो शख़्स भी नीचे लिखी दुआ को रमज़ानुल मुबारक में हर वाजिब नमाज़ के बाद पढ़ेगा ख़ुदावन्दे आलम क़यामत के दिन तक उसके तमाम गुनाह बख़्श देगा।

اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْ عَلٰى اَهْلِ الْقُبُوْرِ السُّرُوْرَ اَللّٰهُمَّ اَغْنِ كُلَّ فَقِيْرٍ اَللّٰهُمَّ اَشْبِعْ كُلَّ جَائِعٍ اَللّٰهُمَّ اُكْسُ كُلَّ عُرْيَانٍ اَللّٰهُمَّ اقْضِ دَيْنَ كُلِّ مَدِيْنٍ اَللّٰهُمَّ فَرِّجْ عَنْ كُلِّ مَكْرُوْبٍ اَللّٰهُمَّ رُدَّ كُلَّ غَرِيْبٍ اَللّٰهُمَّ فُكَّ كُلَّ اَسِيْرٍ اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ كُلَّ فَاسِدٍ مِنْ اُمُوْرِ الْمُسْلِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اشْفِ كُلَّ مَرِيْضٍ اَللّٰهُمَّ سُدَّ فَقْرَنَا بِغِنَاكَ اَللّٰهُمَّ غَيِّرْ سُوْءَ حَالِنَا بِحُسْنِ حَالِكَ اَللّٰهُمَّ اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَاَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر.

अल्लाहुम–म अद्ख़िल अ़ला अह्लिल कुबूरिस्सुरूर। अल्लाहुम्मग़नि कुल–ल फ़क़ीर। अल्लाहुम्मशबिअ़् कुल–ल जाइअ़्। अल्लाहुम्मकसु कुल–ल उ़रयान। अल्लाहुम्मक़्ज़ि दै–न कुल–ल मदीन। अल्लाहुम–म फ़र्रिज अनकुल्लि मकरूब। अल्लाहुम–म रूद–द कुल–ल ग़रीब। अल्लाहुम–म फुक–क कुल–ल असीर। अल्लाहुम–म असलिह कुल–ल फ़ासिदिम्मिन उमूरिल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्मशिफ़ कुल–ल मरीज़। अल्लाहुम–म सुद–द फ़क़्रना बिग़िनाक। अल्लाहुम–म ग़ैय्यिर सू–अ ह़ालिना बिहुस्नि ह़ालिक। अल्लाहुमक़्ज़ि अन्नद्दै–न व अग़निना मिनल्फ़क़्र। इन–न–क अला कुल्लि शैइन क़दीर।

तर्जुमा: ऐ अल्लाह क़ब्र में दफ़न होने वालों को खुश कर दे, ऐ अल्लाह हर फ़क़ीर को ग़नी कर दे, ऐ अल्लाह सारे भूकों का पेट भर दे, ऐ अल्लाह हर बेलिबास को लिबास अ़ता कर दे, ऐ अल्लाह हर कर्ज़दार के क़र्ज़ को अदा कर दे, ऐ अल्लाह हर परेशान हाल के ग़म को दूर कर दे, ऐ अल्लाह हर मुसाफ़िर को उसके वतन तक पहुंचा दे, ऐ अल्लाह तमाम कै़दियों को कै़द ख़ानों से आज़ाद करा दे, ऐ अल्लाह मुसल्मानों के बिगड़े कामों को बना दे, ऐ अल्लाह हर मरीज़ को शिफ़ा अ़ता फ़रमा,

ऐ अल्लाह अपनी तवंगरी के ज़रिए हमारी गुरबत को दूर कर दे, ऐ अल्लाह हमारी बुरी हालत को अपने बहतरीन करम से बदल दे, ऐ अल्लाह हमारे क़र्ज़ को अदा कर दे और हमारी गुरबत को अमीरी में बदल दे। बेशक तेरी ज़ात हर काम पर कुदरत रखने वाली है।

दूसरी क़िस्म

हर रोज़ की दुआ

पहले दिन की दुआः अल्लाहुम्मज अ़ल सि़यामी फ़ीहि सि़यामस्सा़इमीन। व क़ियामि फ़ीहि क़ियामल क़ाइमीन। व नब्बिहनी फ़ीहि अ़न नौमिल ग़ाफ़िलीन। व हबली जुर्मी फ़ीहि या इलाहल आ़लमीन। वअ्फुअ़न्नी या आ़फ़ियन अ़निल मुजरिमीन।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صِيَامِى فِيْهِ صِيَامَ الصَّائِمِيْنَ وَقِيَامِى فِيْهِ قِيَامَ الْقَائِمِيْنَ وَنَبِّهْنِى فِيْهِ عَنْ نَوْمَةِ الْغَافِلِيْنَ وَهَبْ لِى جُرْمِى فِيْهِ يَااِلٰهَ الْعَالَمِيْنَ وَاعْفُ عَنِّى يَاعَافِيًا عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस माहे रमज़ान में मेरे रोज़े को सच्चे रोज़ेदारों जैसा और मेरी नमाज़ को सही नमाज़ गुज़ारों जैसी क़रार दे और मुझे बेख़बर लोगों जैसी नींद से होशियार रख और इस में मेरे गुनाह को बख़्श दे, ऐ सारी दुनियाओं के खुदा और मुझे माफ़ कर ऐ गुनहगारों को माफ़ करने वाले।

दूसरे दिन की दुआ: अल्लाहुम–म क़र्रिबनी फ़ीहि इला मरज़ातिक। व जन्निबनी फ़ीहि मिन स–ख़तिक व नक़िमातिक। व वफ़्फ़िक़्नी फ़ीहि लिक़िरआतिहि आयातिक। बिरहमति–क या अरहमर्राहिमीन।

اَللّٰھُمَّ قَرِّبْنِی فِیْہِ اِلیٰ مَرْضَاتِکَ وَ جَنِّبْنِی فِیْہِ مِنْ سَخَطِکَ وَنَقِمَاتِکَ وَوَفِّقْنِی فِیْہِ لِقِرَآئَۃِ اٰیَاتِکَ بِرَحْمَتِکَ یَااَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

तर्जुमा: ऐ अल्लाह मुझे इस महीने में अपनी ख़ुशनूदी से क़रीब कर और अपनी नाराज़गी और ग़ज़ब से इस महीने में मुझे बचाए रख और अपनी रहमत के वसीले से मुझे क़ुरआन की तिलावत की तौफ़ीक़ अता कर, ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

तीसरे दिन की दुआ: अल्लाहुम्मरज़ुक़्नी फ़ीहिज़्ज़िह–न वत्तम्बीह। व बाइद्नी फ़ीहि मिनस्सफ़ाहति वत्तम्बीह। वजअल्ली नसीबम्मिन कुल्लि ख़ैरिन तुनज़िलु फ़ीह। बिजूदि–क या अज्वदल अज्वदीन।

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِی فِیْہِ الذِّھْنَ وَالتَّنْبِیْہِ وَبَاعِدْنِی فِیْہِ مِنَ السَّفَاھَۃِ وَالتَّمْوِیْہِ وَاجْعَلْ لِی نَصِیْبًامِنْ کُلِّ خَیْرٍ تُنَزِّلُ فِیْہِ بِجُوْدِکَ یَااَجْوَدَالاَجْوَدِیْنَ.

तर्जुमा: ऐ अल्लाह इस महीने में मुझे ज़िहानत और तवज्जो अता कर। और बे अक़्ली और मक्कारी से मुझे दूर रख। और ए सारे सख़ावत करने वालों में सबसे ज़्यादा सख़ी! अपने जूदो करम से इस रात में तू जो कुछ अच्छाई और बेहतरी नाज़िल करेगा उसमें से मेरे लिए भी हिस्सा क़रार दे।

चौथे दिन की दुआ: अल्लाहुम–म क़व्विनी फ़ीहि अ़ला इक़ामति

अमरिक। व अज़िक़नी फ़ीहि हलाव–त ज़िकरिक। व औज़िअ्नी फ़ीहि लिअदाइ शुकरि–क बि क–र–मिक। वहफ़ज़्नी फ़ीहि बिहिफ़्ज़ि–क सतरिक। या अब्सरन्नाज़िरीन।

اَللّٰهُمَّ قَوِّنِی فِیْهِ عَلٰی اِقَامَةِ اَمْرِکَ وَاَذِقْنِی فِیْهِ حَلاوَةَ ذِکْرِکَ وَاَوْزِعْنِی فِیْهِ لاَدَاءِ شُکْرِکَ بِکَرَمِکَ وَاحْفَظْنِی فِیْهِ بِحِفْظِکَ وَسَتْرِکَ یَااَبْصَرَ النّٰاظِرِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह तू मुझे इस महीने में अपने एहकाम को क़ाएम करने की ताक़त अता फ़रमा। और मुझे अपने ज़िक्र की शीरीनी चखा और मुझे अपने करम के वास्ते से अपनी शुक्रगुज़ारी के लिए तय्यार कर दे। और अपनी परदा पोशी और हिफ़ाज़त के ज़रिए मुझे महफ़ूज़ रख। ऐ देख भाल करने वालों में सब से ज़्यादा देख भाल करने वाले।

पाँचवे दिन की दुआः अल्लाहुमज्अलनी फ़ीहि मिनल मुस्तग़फ़िरीन। वजअलनी फ़ीहि मिन इबादिकस्सालिहीनल क़ानितीन। वज्अलनी फ़ीहि मिन औलियाइकल मुक़र्रबीन। बिराफ़ति–क या अरहमर्राहिमीन।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِی فِیْهِ مِنَ الْمُسْتَغْفِرِیْنَ وَاجْعَلْنِی فِیْهِ مِنْ عِبَادِکَ الصَّالِحِیْنَ الْقَانِتِیْنَ وَاجْعَلْنِی فِیْهِ مِنْ اَوْلِیَائِکَ الْمُقَرَّبِیْنَ بِرَاْفَتِکَ یَااَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह तू मुझे इस महीने में इस्तिग़फ़ार करने वालों में से क़रार दे। और तू मुझे इस महीने में उन नेक बंदों में क़रार दे जो तुझ से लौ लगाए हुए मुनाजात करते रहते हैं। और अपनी महरबानी से तू मुझे इस महीने में अपने उन दोस्तों में से क़रार दे जो तेरे बहुत क़रीब हैं, ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले!

छठे दिन की दुआः अल्लाहुम–म ला तख़ज़ुल्नी फ़ीहि लितअर्रुज़ि मअ्सियतिक। वला तज़रिब्नी बिसियाति निक़्मतिक। वज़हज़िहनी फ़ीहि मिम्मूजिबाति सख़्–ति–क बिमन्नि–क व अयादीक। या मुन्तहा रग़बतिर्राग़िबीन।

اَللّٰهُمَّ لَاتَخْذُلْنِی فِیْهِ لِتَعَرُّضِ مَعْصِیَتِکَ وَلَاتَضْرِبْنِی بِسِیَاطِ نَقِمَتِکَ وَ
زَحْزِحْنِی فِیْهِ مِنْ مُوْجِبَاتِ سَخَطِکَ بِمَنِّکَ وَاَیَادِیْکَ یَامُنْتَهٰی رَغْبَةِ الرَّاغِبِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह कहीं इस महीने में अपनी नाफ़रमानियां करने के लिए मुझे आज़ाद मत छोड़ देना और कहीं अपनी नाराज़गी और ग़ज़ब के कोड़े मुझ पर न बरसाने लगना। और अपनी नेमत और एहसान के सहारे मुझे इस महीने में अपनी नाराज़गी और ग़ज़ब के असबाब से दूर करना, ऐ रग़बत करने वालों की आख़िरी ह़द।

7वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म अइन्नी फ़ीहि अ़ला सियामिही व क़ियामिह। वजन्निबनी फ़ीहि मिन ह–फ़–वातिही व आसामिह। वरज़ुक़्नी फ़ीहि ज़िक–र–क बिदवामिह। बि तौफ़ीक़ि–क या हादियल मुज़िल्लीन।

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّی فِیْهِ عَلٰی صِیَامِهٖ وَ قِیَامِهٖ وَ جَنِّبْنِی فِیْهِ مِنْ هَفَوَاتِهٖ وَ آثَامِهٖ وَارْزُقْنِی
فِیْهِ ذِکْرَکَ بِدَوَامِهٖ بِتَوْفِیْقِکَ یَاهَادِیَ الْمُضِلِّیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में रोज़े रखने और नमाज़ पढ़ने में मेरी मदद कर। और मुझे ग़लतियों और गुनाहों से इस महीने में बचा। और अपनी तौफ़ीक़ के सहारे मुझे अपने ऐसे ज़िक्र की तौफ़ीक़ अता कर जो

हमेशा बाक़ी रहने वाला हो, ऐ गुमराहों की हिदायत करने वाले!

8वें दिन की दुआः अल्लाहुमरज़ुक़्नी फ़ीहि रह्मतल ईताम। व इत्‌आमत्तआम। व इफ़शाअस्सलाम। व सुह्बतल किराम। बितौलि–क या मल्‌जअल आमिलीन।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِي فِيْهِ رَحْمَةَ الْأَيْتَامِ وَاِطْعَامَ الطَّعَامِ وَاِفْشَاءَ السَّلَامِ وَصُحْبَةَ الْكِرَامِ بِطَوْلِكَ يَامَلْجَأَ الْاٰمِلِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मुझे यतीमों के साथ मेहरबानी करने का जज़्बा अता कर। खाना खिलाने, अम्नो अमान को आम करने और शरीफ़ों और बुज़ुर्गों की सोहबत में बैठने का मौक़ा अता कर, अपने करम के ज़रिए। ऐ उम्मीद करने वालों की उम्मीद!

9वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मज्‌अल्ली फ़ीहि नसीबम् मिर्रह्मतिकल वासिअः। वहदिनी फ़ीहि लिबराहीनिकस्सातिअः। व ख़ुज़ बिनासियती इला मरज़ातिकल जामिअः। बि महब्बति–क या अ–म–लल मुशताक़ीन।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِي فِيْهِ نَصِيْبًا مِنْ رَحْمَتِكَ الْوَاسِعَةِ وَاهْدِنِي فِيْهِ لِبَرَاهِيْنِكَ السَّاطِعَةِ وَخُذْ بِنَاصِيَتِي اِلٰى مَرْضَاتِكَ الْجَامِعَةِ بِمَحَبَّتِكَ يَااَمَلَ الْمُشْتَاقِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में तू अपनी फैली हुई रहमत का मेरे लिए भी एक हिस्सा क़रार दे। और इस महीने में अपनी रौशन निशनियों की तरफ़ मेरी हिदायत कर। और मुझे अपनी खुशनूदी और रज़ामन्दी की तरफ़ ले जा अपनी मुहब्बत

के वसीले से, ऐ मुशताक़ोंकी उम्मीद के मरकज़!

10वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मजअ़ल्नी फ़ीहि मिनल मु–तवक्किली–न अ़लैक। वज्अ़लनी फ़ीहि मिनल फ़ाइज़ी–न लदैक। वज्अ़लनी फ़ीहि मिनल मुक़र्रबी–न इलैक। बिइह़सानि–क या ग़ा–यतत्तालिबीन।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِی فِیْهِ مِنَ الْمُتَوَكِّلِیْنَ عَلَیْکَ وَاجْعَلْنِی فِیْهِ مِنَ الْفَائِزِیْنَ لَدَیْکَ وَاجْعَلْنِی فِیْهِ مِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ اِلَیْکَ بِاِحْسَانِکَ یاغَایَةَ الطَّالِبِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह तू मुझे इस महीने में अपनी ज़ात पर भरोसा करने वालों में से क़रार दे। और मुझे इस महीने में उन लोगों में से क़रार दे जो तेरे नज़दीक कामयाब और हिदायत पाए हुए हैं। और मुझे इस महीने में उन लोगों में से क़रार दे जो तेरे मुक़र्रब बन्दे हैं, अपने एहसान के तुफ़ैल में। ऐ तलबगारों के आख़िरी मक़सद!

11वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म ह़ब्बिब इलै–य्य फ़ीहिल एह़सान। व कर्रिह इलै–य्य फ़ीहिल फुसू–क़ वल इ़स्यान। व ह़र्रिम अ़लै–य फ़ीहिस स–ख़्–त वन्नीरान। बिऔ़नि–क या गि़यासल मुस्तग़ीसीन।

اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَیَّ فِیْهِ الاِحْسَانَ وَکَرِّهْ اِلَیَّ فِیْهِ الْفُسُوقَ وَالْعِصْیَانَ وَحَرِّمْ عَلَیَّ فِیْهِ السَّخَطَ وَالنِّیْرَانَ بِعَوْنِکَ یاغِیَاثَ الْمُسْتَغِیْثِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह मेरे लिए इस महीने में एहसान और नेकी करने को मज़ेदार बना दे। और इस महीने में फ़िस्क़ो फुजूर और गुनाह से मेरे अन्दर नफ़रत पैदा कर दे। और इस महीने में अपनी नाराज़गी और जहन्नम

की आग को मेरे ऊपर ह़राम कर दे, अपनी मदद के ज़रिए, ऐ फ़रयादियों की फ़रयाद को पहुचने वाले!

12वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म ज़य्यिनी फ़ीहि बिस्सित्रि वलअ़फ़ाफ़। वस्तुरनी फ़ीहि बिलिबासिल कुनूइ वल कफ़ाफ़। वह्मिल्नी फ़ीहि अ़लल अ़द्लि वल इंसाफ़। व आमिन्नी फ़ीहि मिन कुल्लि मा–अख़ाफ़। बिइस्मति–क या इस्मतल ख़ाइफ़ीन।

اَللّٰهُمَّ زَيِّنِّى فِيْهِ بِالسِّتْرِ وَالْعَفَافِ وَاسْتُرْنِى فِيْهِ بِلِبَاسِ الْقُنُوْعِ وَالْكَفَافِ
وَاحْمِلْنِى فِيْهِ عَلَى الْعَدْلِ وَالْاِنْصَافِ وَاٰمِنِّى فِيْهِ مِنْ كُلِّ مَااَخَافُ
بِعِصْمَتِكَ يَاعِصْمَةَ الْخَائِفِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मुझे पारसाई और पाकदामनी से आरास्ता कर दे। और मुझे इस महीने में किफ़ायत शियारी और क़िनाअत के लिबास में छुपा दे। और इस महीने में मुझे अद्ल व इन्साफ़ बरतने के लिए तय्यार कर दे। और इस में मुझे हर उस चीज़ से महफ़ूज़ कर दे जिस से मैं डरता हूं, अपनी हिफ़ाज़त और मदद के ज़रिए। ऐ डरने वालों की हिफ़ाज़त!

13वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म तह्हिरनी फ़ीहि मिनद्–द–न–सि वल अक़ज़ार। वसब्बिरनी फ़ीहि अ़ला काइनातिल अक़दार। व वफ़्फ़िक़्नी फ़ीहि लित्तुक़ा वसुह़बतिल अबरार। बिऔनि–क या कुर–र–त ऐनिल मसाकीन।

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِى فِيْهِ مِنَ الدَّنَسِ وَالْاَقْذَارِ وَصَبِّرْنِى فِيْهِ عَلٰى كَائِنَاتِ
الْاَقْدَارِ وَوَفِّقْنِى فِيْهِ لِلتُّقٰى وَصُحْبَةِ الْاَبْرَارِ بِعَوْنِكَ يَاقُرَّةَ عَيْنِ الْمَسَاكِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीन में तू मुझे मैल कुचैल और निजासतों से पाक कर दे। और क़ज़ा व क़द्र के हवादिस पर मुझे मुतहम्मिल बना। और तू मुझे अपनी मदद से नेक लोगों की सोहबत और परहेज़गारी की तौफ़ीक अता कर, ऐ ग़रीबों की आंखों की ठण्डक!

14वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म ला तुआख़िज़नी फ़ीहि बिल अ–स–रात। व अक़िलनी फ़ीहि मिनल ख़ताया वल ह–फ़–वात। वला तज्अल्नी फ़ीहि ग़–र–ज़न लिल बलाया वल आफ़ात। बि इज़्ज़ति–क या इज़्ज़ल मुस्लिमीन।

اَللّٰھُمَّ لَاتُؤَاخِذْنِی فِیْہِ بِالْعَثَرَاتِ وَاَقِلْنِی فِیْہِ مِنَ الْخَطَایَاوَالْھَفَوَاتِ وَلَاتَجْعَلْنِی فِیْہِ غَرَضًالِلْبَلَایَاوَالاٰفَاتِ بِعِزَّتِکَ یَاعِزَّالْمُسْلِمِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मेरी ग़लतियों की पकड़ मत कर। और इस महीने में मुझे ख़ताओं और ग़लतियों से माफ़ कर। और इस महीने में मुझे बलाओं और आफ़तों का निशाना क़रार न दे, अपनी इज़्ज़त के तुफ़ैल में, ऐ मुसल्मानों की इज़्ज़त।

15वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मरज़ुक़्नी फ़ीहि ता–अतल ख़ाशिईन। वश्रह फ़ीहि सदरी बिइनाबतिल मुख़बितीन। बिअमानि–क या अमानल ख़ाइफ़ीन।

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِی فِیْہِ طَاعَۃَ الْخَاشِعِیْنَ وَاشْرَحْ فِیْہِ صَدْرِی بِاِنَابَۃِ الْمُخْبِتِیْنَ بِاَمَانِکَ یَااَمَانَ الْخَائِفِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मुझे फ़रोतनी करने वालों की सी इताअत अता कर। और इस महीने में तेरी तरफ़ लौ लगाने वालों की सी तवज्जो के लिए मेरे सीने को कुशादा कर, अपनी सिफ़त अमान के वास्ते से, ऐ डरे हुए लोगों की अमान।

16वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म वफ़्फ़िक़्नी फ़ीहि लिमुवा–फ़–क़–तिल अबरार। वजन्निबनी फ़ीहि मुरा–फ़–क़–तल अशरार। व आविनी फ़ीहि बिरहमति–क इला दारिल क़रार। बिइलाहियति–क या इलाहल आलमीन।

اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِى فِيْهِ لِمُوَافَقَةِالْأَبْرَارِ وَجَنِّبْنِى فِيْهِ مُرَافَقَةَالْأَشْرَارِوَاٰوِنِى فِيْهِ بِرَحْمَتِكَ اِلٰى دَارِالْقَرَارِبِاِلٰهِيَّتِكَ يَااِلٰهَ الْعَالَمِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मुझे नेक काम करने वाले लोगों के साथ क़रार दे। और बदकिरदार लोगों की सोहबत से बचा। और इस महीने में मुझे अपनी रहमत से हमेशा बाक़ी रहने वाली दुनिया में पनाह दे, अपनी खुदाई के वास्ते से, ऐ सारे जहानों के खुदा!

17वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मह्दिनी फ़ीहि लिसालिहिल आमाल। वक़्ज़ि ली फ़ीहिल हवाइ–ज वल आमाल। या मल्लायहताजु इलत्तफ़सीरि वस्सुआल। या आलिमन बिमाफ़ीसुदूरिल आलमीन। सल्लिअला मुहम्मदिंव व आलिहित्ताहिरीन।

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِى فِيْهِ لِصَالِحِ الْأَعْمَالِ وَاقْضِ لِى فِيْهِ الْحَوَائِجَ وَالْآمَالَ يَامَنْ لَايَحْتَاجُ اِلَى التَّفْسِيْرِوَالسُّؤَالِ يَاعَالِمًابِمَافِى صُدُوْرِالْعَالَمِيْنَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍوَاٰلِهِ الطَّاهِرِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मुझे अच्छे आमाल की हिदायत कर। और इस महीने में मेरी हाजतों और उम्मीदों को पूरा कर जबकि तू बयान करने और सवाल करने का मोहताज नहीं है। ऐ सारे जहानों में बसने वालों के दिलों को अच्छी तरह जानने वाले! हज़रते मुहम्मद और उनकी आले पाक पर रहमत नाज़िल फ़रमा!

18वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म नब्बिहनी फ़ीहि लि–ब–र–काति अस्हारिह। व नव्विर फ़ीहि क़ल्बी बिज़ियाइ अनवारिह। व ख़ुज़ बि कुल्लि आज़ाई इलत्तिबाइ आसारिह। बिनूरि–क या मुनव्वि–र कुलूबिल आरिफ़ीन।

اَللّٰهُمَّ نَبِّهْنِي فِيْهِ لِبَرَكَاتِ اَسْحَارِهٖ وَنَوِّرْ فِيْهِ قَلْبِي بِضِيَاءِ اَنْوَارِهٖ وَخُذْ بِكُلِّ
اَعْضَائِي اِلَى اتِّبَاعِ اٰثَارِهٖ بِنُوْرِكَ يَا مُنَوِّرَ قُلُوْبِ الْعَارِفِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मुझे पिछले पहर की बरकतों के लिए बेदार रख। और इस महीने में रौशनियों की चमक से मेरे दिल को भी रौशन रख। और मेरे जिस्म के हर हिस्से को उसके असरात की पैरवी का पाबन्द बना, अपने नूर के तुफ़ैल में, ऐ आरिफ़ों के दिलों को यादे इलाही के नूर से मुनव्वर करने वाले!

19वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म वफ़्फ़िर फ़ीहि हज़्ज़ी मिम–ब–र–का–तिह। व सह्हिल सबीली इला ख़ैरातिह। वला तह्रिम्नी क़बू–ल ह–स–नातिह। या हादियने इलल हक़्क़िल मुबीन।

اَللّٰهُمَّ وَفِّرْ فِيْهِ حَظِّي مِنْ بَرَكَاتِهٖ وَسَهِّلْ سَبِيْلِيْ اِلٰى خَيْرَاتِهٖ وَلَا تَحْرِمْنِي
قَبُوْلَ حَسَنَاتِهٖ يَا هَادِيًا اِلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने की ख़ैर व बरकत में मेरे लिए ज्यादा हिस्सा क़रार दे। और मेरे लिए इसकी ख़ैर व बरकत हासिल करने के रास्ते पैदा कर। और इस महीने के नेक आमाल की कुबूलियत से महरूम न कर, ऐ रौशन ह़क की तरफ़ रास्ता दिखाने वाले!

20वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मफ़्तह ली फ़ीहि अबवाबल जिनान। व अग़्लिक़ अन्नी फ़ीहि अबवाबन्नीरान। व वफ़्फ़िक़्नी फ़ीहि लि तिलावतिल कुरआन। या मुंजिलस्सकीनति फ़ी कुलूबिल मोमिनीन।

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِی فِیْهِ اَبْوَابَ الْجِنَانِ وَاَغْلِقْ عَنِّی فِیْهِ اَبْوَابَ النِّیْرَانِ وَوَفِّقْنِی
فِیْهِ لِتِلاَوَةِ الْقُرْاٰنِ یَامُنْزِلَ السَّكِیْنَةِ فِی قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने मे मेरे लिए जन्नत के दरवाज़ों को खोल दे, और जहन्नम के दरवाज़ों को इस महीने में मेरे लिए बन्द कर दे। और मुझे कुरआन की तिलावत की तौफ़ीक अता कर, ऐ मोमिनों के दिलों में सुकून और इत्मिनान उतारने वाले।

21वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मज्अल ली फ़ीहि इला म–र–ज़ाति–क दलीला। व तज्अल लिश्शैतानि फ़ीहि अलै–य सबीला। वज्अलिल जन्न–त ली मंजिलवं व मुक़ीला। या क़ाज़ि–य हवाइजित्तालिबीन।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِی فِیْهِ اِلٰی مَرْضَاتِکَ دَلِیْلاً وَتَجْعَلْ لِلشَّیْطَانِ فِیْهِ عَلَیَّ سَبِیْلاً
وَاجْعَلِ الْجَنَّةَ لِی مَنْزِلاً وَمَقِیْلاً یَا قَاضِیَ حَوَائِجِ الطَّالِبِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मेरे लिए अपनी खुशनूदी की तरफ़ रास्ता

दिखाने वाला अता फ़रमा। और इस महीने में शैतान के लिए मेरी तरफ़ आने का कोई भी रास्ता मत छोड़। और जन्नत को मेरे लिए आराम गाह और रहने की जगह क़रार दे, ऐ तलबगारों की ह़ाजतों को पूरा करने वाले।

22वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मफ़्तह ली फ़ीहि अबवा–ब फ़ज़्लिक। व अनज़िल अलै–य फ़ीहि ब–र–कातिक। व वफ़्फ़िक़्नी फ़ीहि लिमूजिबाति मरज़ातिक। व अस्किन्नी फ़ीहि बिहुबूहाति जन्नातिक। या मुजी–ब दावतिल मुज़तर्रीन।

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِی فِیْهِ اَبْوَابَ فَضْلِکَ وَ اَنْزِلْ عَلَیَّ فِیْهِ بَرَکَاتِکَ وَوَفِّقْنِی فِیْهِ لِمُوْجِبَاتِ مَرْضَاتِکَ وَاَسْکِنِّی فِیْهِ بِحُبُوْحَاتِ جَنَّاتِکَ یَامُجِیْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मेरे लिए अपने फ़ज़्ल व करम के दरवाज़ों को खोल दे। और इस महीने में मेरे उपर अपनी बरकतों की बारिश कर। और मुझे इस महीने में अपनी खुशनूदी हासिल करने की तौफ़ीक़ अता कर। और इस महीने में मुझे अपनी दूर दूर तक फैली हुई जन्नत में रहने का मौक़ा फ़राहम कर, ऐ मुज़तर होने वालों की दुआ को कुबूल करने वाले।

23वें दिन की दुआः अल्लाहुमग़्सिल्नी फ़ीहि मिनज़्ज़ुनूब। व तह्हिरनी फ़ीहि मिनल उ़यूब। वम तहि़न क़ल्बी फ़ीहि बितक़वल कुलूब। या मुक़ी–ल अ–स–रा–तिल मुज़निबीन।

اَللّٰهُمَّ اغْسِلْنِی فِیْهِ مِنَ الذُّنُوْبِ وَطَهِّرْنِی فِیْهِ مِنَ الْعُیُوْبِ وَامْتَحِنْ قَلْبِی فِیْهِ بِتَقْوَی الْقُلُوْبِ یَا مُقِیْلَ عَثَرَاتِ الْمُذْنِبِیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! इस महीने में मुझे गुनाहों के मैल से धो दे और गुनाहों की बुराईयों से पाक साफ़ कर दे। और इस महीने में तक़्वे से मेरे दिल का इम्तेहान कर ले, ऐ गुनाहगारों की गलतियों को माफ़ करने वाले!

24वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म इन्नी अस्अलु–क फ़ीहि मा–युरज़ीक। व अऊज़ुबि–क मिम्मा युअ्ज़ींक। व अस्अलुकत्तौफ़ी–क़ फ़ीहि लिअनउती–अ्–क वला आसियक। या जवादस्साइलीन।

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ فِیْهِ مَایُرْضِیْکَ وَاَعُوْذُ بِکَ مِمَّایُؤْذِیْکَ وَ اَسْئَلُکَ
التَّوْفِیْقَ فِیْهِ لِاَنْ اُطِیْعَکَ وَلَااَعْصِیْکَ یَاجَوَادَالسَّائِلِیْن

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! इस महीने में तुझ से ऐसी बात का सवाल करता हूं जो तेरी खुशनूदी का सबब हो और तुझसे ऐसी चीज़ो से पनाह चाहता हूं जो तेरी ना पसन्दीदगी और अज़ीय्यत का सबब हों। और इस महीने में तुझसे तौफ़ीक़ मांगता हूं कि तेरी इताअत करूं और तेरी नाफ़रमानी न करूं, ऐ सवाल करने वालो पर सखावत करने वाले!

25वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मजअलनी फ़ीहि मुहिब्बल लि औलियाइ–क व मुआदियल्लिआदाइ–क मुसतन्नम बि सुन्नति ख़ा–त–मि अम्बियाइक। या आसि–म क़ुलूबिन्नबीयीन।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِی فِیْهِ مُحِبًّا لِاَوْلِیَائِکَ وَمُعَادِیًا لِاَعْدَائِکَ مُسْتَنًّا بِسُنَّةِ خَاتَمِ
اَنْبِیَائِکَ یَاعَاصِمَ قُلُوْبِ النَّبِیِّیْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! इस महीने में तू मुझे अपने प्यारों का आशिक़ और अपने दुश्मनों का दुश्मन बना दे। और अपने आख़िरी नबी की सुन्नत का पैरोकार बना दे, ऐ नबियों के दिलों को मासूम बनाने वाले!

26वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मज अल सअ्यी फ़ीहि मशकूरा। व ज़म्बी फ़ीहि मग़फ़ूरा। व अ–म–ली फ़ीहि मक़बूला। व ऐबी फ़ीहि मस्तूरा। या अस्मअस्सामिईन।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ سَعْيِى فِيْهِ مَشْكُوْرًا وَذَنْبِى فِيْهِ مَغْفُوْرًا وَعَمَلِى فِيْهِ
مَقْبُوْلًا وَعَيْبِى فِيْهِ مَسْتُوْرًا يَا اَسْمَعَ السَّامِعِيْن

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मेरी कोशिश को क़ाबिले ऐतेराफ़ बना दे और मेरा गुनाह इस महीने में क़ाबिले बख़शिश और मेरा अमल इस महीने में क़ाबिले क़बूल और मेरी बुराई इस महीने में पोशीदा क़रार दे, ऐ सुनने वालों में सबसे ज़्यादा सुनने वाले!

27वें दिन की दुआः अल्लाहुमर्रज़ुक़्नी फ़ीहि फ़ज़–ल लै–लतिल क़द्र। व सय्यिर उमूरी फ़ीहि मिनल उसरि इलल युस्र। वक़बिल मआज़ीरी व हुत–त अन्निज़्ज़म–ब वल विज़्र। या रऊफ़म बिइबादिहिस्सालिहीन।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِى فِيْهِ فَضْلَ لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَصَيِّرْ فِيْهِ اُمُوْرِىْ مِنَ الْعُسْرِ اِلٰى
الْيُسْرِ وَاقْبَلْ مَعَاذِيْرِى وَحُطَّ عَنِّى الذَّنْبَ وَ الْوِزْرَ يَارَؤُفًا بِعِبَادِهِ الصَّالِحِيْن

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मुझे शबे क़द्र की फ़ज़ीलत अता कर। और इस महीने में मेरे मामलों को मुश्किलों से आसानी की तरफ़ पलटा

दे। और मेरी मुआफ़ियों को कुबूल कर ले। और मेरे गुनाहों और बोझ (मेरे कंधों से) को उतार दे, ऐ नेक बन्दों पर मेहरबान।

28वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म वफ़्फ़िर हज़्ज़ी फ़ीहि मिनन्नवाफ़िल। व अकरिम्नी फ़ीहि बिइहज़ारिल मसाइल। वक़र्रिब फ़ीहि वसीलती इलै–क मिम बैनिल वसाइल। या मल्ला यशग़लुहू इल्हाहुल मुलिह्हीन।

اَللّٰهُمَّ وَفِّرْ حَظِّى فِيْهِ مِنَ النَّوَافِلِ وَاَكْرِمْنِى فِيْهِ بِاِحْضَارِ الْمَسَائِلِ وَقَرِّبْ فِيْهِ
وَسِيلَتِى اِلَيْكَ مِنْ بَيْنِ الْوَسَائِلِ يَامَنْ لَايَشْغَلُهُ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मुस्तहब कामों में मेरा हिस्सा ज़्यादा कर दे। और इस महीने में मेरे सवालों को पूरा फ़रमा। और वसीलों में मेरा वसीला ज़्यादा क़रीब कर दे, ऐ वह कि जिसे फ़रयादियों की फ़रयाद दूसरों की तरफ़ मुतवज्जेह होने से नहीं रोक पाती!

29वें दिन की दुआः अल्लाहुम–म ग़श्शिनी फ़ीहि बिर्रहमह। वरज़ुक़्नी फ़ीहित्तौफ़ी–क़ वल इस्मह। व तह्हिर क़ल्बी मिन ग़याहिबित्तुहमह। या रहीमम बि इबादिहिल मोमिनीन।

اَللّٰهُمَّ غَشِّنِى فِيْهِ بِالرَّحْمَةِ وَارْزُقْنِى فِيْهِ التَّوْفِيْقَ وَالْعِصْمَةَ وَطَهِّرْ قَلْبِى مِنْ
غَيَاهِبِ التُّهَمَةِ يَارَحِيْمًا بِعِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में तू मुझे अपनी रहमत में ढांप ले। और इस महीने में तू मुझे तौफ़ीक़ और हिफ़ाज़त अता कर। और मेरे दिल को ग़लत ख़्यालों के अंधेरों से पाक कर दे, ऐ मोमिन बन्दों पर रहम करने वाले!

30वें दिन की दुआः अल्लाहुम्मज अल सियामी फ़ीहि बिश्शुक्रि वल क़बूलि अला मातरज़ाह। व यरज़ाहुर्रसूलु मुहकमतन फ़ुरूउहू बिल उसूलि बिहक़्क़ि सय्यिदिना मुहम्मदिंव व आलिहित्ताहिरीन। वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صِيَامِي فِيْهِ بِالشُّكْرِ وَالْقَبُوْلِ عَلٰى مَاتَرْضَاهُ وَيَرْضَاهُ الرَّسُوْلُ مُحْكَمَةً فُرُوْعُهُ بِالْاُصُوْلِ بِحَقِّ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

तर्जुमाः ऐ अल्लाह इस महीने में मेरे रोज़े को शुक्र और कुबूल से इस तरह मिला दे जिससे तू भी राज़ी हो और तेरा रसूल भी। जिसकी टेहनियां जड़ों की मज़बूती की वजह से मज़बूत हों (उसूले दीन इतने मज़बूत हों कि फ़ुरूए दीन भी मज़बूत हो जाए), तुझे वास्ता हमारे सरदार हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा (स.) और उनकी पाकीज़ा औलाद (अ.) का, सारी तारीफ़ें सिर्फ़ और सिर्फ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का पालने वाला है!

तीसरी क़िस्म

वह आमाल जो रमज़ानुल मुबारक की रातों में अन्जाम देना चाहिएं-

1–**इफ़्तारः** मुस्तहब है कि नमाज़े मग़रिब व इशा के बाद इफ़्तार करे।

2–**दुआए इफ़्तारः** इफ़्तार के वक़्त ये दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلیٰ رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ

अल्लाहुम–म ल–क सुम्तु व अला रिज़्क़ि–क अफ़्तरतु व अलै–क तवक्कलतु।

तर्जुमाः परवरदिगार मैंने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरी रोज़ी से इफ़्तार किया और तुझ पर तवक्कुल किया।

3–जो शख़्स रमज़ानुल मुबारक में हर रात में ये दुआ पढ़े उसके चालीस साल के गुनाह बख़्श दिये जाएंगेः

اَللّٰهُمَّ رَبَّ شَهْرِ رَمَضَانَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ فِیْهِ الْقُرْآنَ وَافْتَرَضْتَ عَلیٰ عِبادِکَ فِیْهِ الصِّیَامَ صَلِّ عَلیٰ مُحَمَّدٍ وَّآلِ مُحَمَّدٍ وَارْزُقْنِی حَجَّ بَیْتِکَ الْحَرامِ فِی عامِی هٰذا وَفِی کُلِّ عامٍ وَاغْفِرْلِی تِلْکَ الذُّنُوْبَ الْعِظامَ فَاِنَّهٗ لَایَغْفِرُهاغَیْرُکَ یا رَحْمٰنُ یا عَلَّامُ

अल्लाहुम–म रब्ब शहरि र–म–ज़ान। अल्लज़ी अन्ज़ल–त फ़ीहिल

कुरआन। वफ़्तरज़–त अला इबादि–क फ़ीहिस्सियाम। सल्लि अला मुहम्मदिंव व आलि मुहम्मद। वरज़ुक़्नी हज–ज बैतिकल हरामि फ़ी आमी हाज़ा। व फ़ी कुल्लि आम। वग़फ़िरली तिलकज़्ज़ुनूबल इज़ाम। फ़इन्नहु ला यग़फ़िरुहा ग़ैरुक। या रहमानु या अल्लाम।

तर्जुमाः ख़ुदाया, ऐ माहे रमज़ान के परवरदिगार! कि इस महीने में तूने कुरआन को नाज़िल किया और तूने इस महीने में अपने बन्दों पर रोज़ा फ़र्ज़ किया है, दुरूद नाज़िल कर मुहम्मद[स०] व आले मुहम्मद[अ०] पर और मुझे ख़ानए काबा के हज की तौफ़ीक़ अता फ़रमा इस साल और हर साल और मेरे बड़े से बड़े गुनाहों को बख़्श दे क्योंकि उनको तेरे अलावा कोई नहीं बख़्श सकता, ऐ रहम करने वाले, ऐ बड़े जानने वाले।

4–दुआए सहर

يَامَفْزَعِيْ عِنْدَ كُرْبَتِيْ وَيَاغَوْثِيْ عِنْدَشِدَّتِيْ اِلَيْكَ فَزِعْتُ وَبِكَ اسْتَغَثْتُ
وَبِكَ لُذْتُ لَااَلُوْذُ بِسِوَاكَ وَلَااَطْلُبُ الْفَرَجَ اِلَّامِنْكَ فَاَغِثْنِيْ وَفَرِّجْ
عَنِّيْ يَامَنْ يَّقْبَلُ الْيَسِيْرَ وَيَعْفُوْ عَنِ الْكَثِيْرِاِقْبَلْ مِنِّى الْيَسِيْرَ وَاعْفُ عَنِّيْ
الْكَثِيْرَ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا تُبَاشِرُبِهٖ قَلْبِيْ
وَيَقِيْنًا صَادِقًا حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَنْ يُّصِيْبَنِيْ اِلَّامَا كَتَبْتَ لِيْ وَرَضِّنِيْ مِنَ الْعَيْشِ
بِمَاقَسَمْتَ لِيْ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَاعُدَّتِيْ فِيْ كُرْبَتِيْ وَيَاصَاحِبِيْ فِيْ شِدَّتِيْ
وَيَاوَلِيِّ فِيْ نِعْمَتِيْ وَيَاغَايَتِيْ فِيْ رَغْبَتِيْ اَنْتَ السَّاتِرُ عَوْرَتِيْ وَالْاٰمِنُ رَوْعَتِيْ
وَالْمُقِيْلُ عَثْرَتِيْ فَاغْفِرْلِيْ خَطِيْئَتِيْ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

या मफ़ज़ई इन–द कुरबती। व या ग़ौसी इन–द शिद्दती। इलै–क

फ़ज़ेअ़तु, व बिकस्तग़स्तु, व बि–क लुज़्तु, ला–अलूज़ु बि सिवाक। वला अतलुबुल फ़–र–ज इल्ला मिन्क्। फ़–अग़िस्नी व फ़र्रिज अन्नी। या मंयक़बलुल यसीर व यअ्फ़ू अनिल कसीर। इक़्बल मिन्निल यसीर। वअ्फ़ु अन्निल कसीर। इन–न–क अन्तल ग़फ़ूरूर्रहीम। अल्लाहुम–म इन्नी अस्अलु–क ईमानन तुबाशिरु बिहि क़ल्बी। व यक़ीनन सादिक़ा। हत्ता आलमु अन्नहू लइं युसीबनी इल्ला मा कतब–त–ली व रज़्ज़िनी मिनल ऐशि बिमा क़सम–त–ली या अरहमर्राहिमीन। या उद्दती फ़ी कुरबती, व या साहिबी फ़ी शिद्दती, व या वलीयि फ़ी नेअ्मती, व या ग़ायती फ़ी र–ग़–ब–ती, अन्तस्सातिरु औरती, वल आमिनु रौअ़ती, वल मुक़ीलु अ़स्रती, फ़ग़फ़िरली ख़तीअती, या अरहमर्राहिमीन।

तर्जुमाः ऐ तकलीफ़ के वक़्त मुझे पनाह देने वाले, ऐ कठिन घड़ी में मेरी फ़रयाद सुनने वाले, मैं तेरी ही पनाह में हूं और तुझ से ही फ़रयाद की है, तुझसे ही लौ लगाता हूं, तेरे अलावा किसी से लौ नहीं लगाता और न तेरे अलावा किसी से खुशहाली का सवाली हूं। तो अब तू मेरी फ़रयाद को सुन ले और मेरी तकलीफ़ को दूर कर दे। ऐ वह! जो थोड़ी सी नेकी को भी क़बूल कर लेता है और बहुत ज़्यादा गुनाह माफ़ कर देता है। मेरे थोड़े से आमाल को क़बूल कर ले और मेरे बहुत सारे गुनाहों को माफ़ कर दे। तू ही बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला है। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ऐसा ईमान चाहता हूं कि जो मेरे दिल में जगह बना ले और ऐसा सच्चा यक़ीन देदे कि मैं यह जान लूं कि जो कुछ भी तूने मेरे लिए लिख दिया है उसके अलावा मुझे कुछ नहीं मिल सकता और मुझको ऐसी

ज़िन्दगी पर राज़ी करदे जो तूने मेरे लिए मोअय्यन कर दी है। ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले, ऐ तकलीफ़ के वक़्त मेरी पूंजी, सख़्ती में हमदम, ऐ मुझे नेअ्मत देने वाले और मेरी तवज्जोह के मरकज़! तू ही मेरे ऐबों को छुपाने वाला है और डर व दहशत के माहौल में इतमीनान देने वाला है। मेरी लग़ज़िश व ग़लती को बख़्श दे। ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

शबे क़द्र की फ़ज़ीलत

शबे क़द्र से अच्छी और अफ़ज़ल पूरे साल में दूसरी कोई रात नहीं है। इस रात के आमाल हज़ार महीनों के आमाल से बेहतर हैं। इस रात में इन्सान की एक साल की तक़दीर लिखी जाती है। इस रात में मलाएका और रूहुलकुदस जो सबसे अज़ीम मलक हैं, परवरदिगार के हुक्म से ज़मीन पर नाज़िल होते हैं और इमामे ज़माना[अ०] की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और जो कुछ भी इन्सान के लिए मुक़द्दर हुआ है इमाम[अ०] की ख़िदमत में पेश करते हैं।

शबे क़द्र के आमाल

(अ) मुशतरक आमाल

(19वीं, 21वीं और 23वीं रात के आमाल)

(1) **गुस्लः** अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है कि इन रातों के गुस्ल को सूरज के छिपने के वक़्त बजा लाए ताकि मग़रिब व इशा उसी गुस्ल से बजा लाए।

(2) **नमाज़ः** दो रकअत नमाज़ इस तरह से कि हर रकअत में सूर–ए–हम्द के बाद सात मरतबा सूर–ए–तौहीद पढ़े और नमाज़ के बाद 70 मरतबा "**अस्तग़फ़िरुल्लाहा व अतूबु इलैह**" पढ़े। हदीसे नबवी में इस नमाज़ के सवाब के बारे में आया है कि जो शख़्स इस नमाज़ को पढ़ेगा अपनी जगह से नहीं उठेगा कि ख़ुदा उसको और उसके माँ–बाप को बख़्श देगा।

(3) **दुआ और कुरआनः** कुरआन मजीद को खोले और अपने सामने रखकर ये दुआ पढ़ेः

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ بِکِتَابِکَ الْمُنْزَلِ وَمَافِیْهِ وَفِیْهِ اسْمُکَ الاَکْبَرُوَاَسْمَاؤُکَ الْحُسْنیٰ وَمَا یُخَافُ وَیُرْجیٰ اَنْ تَجْعَلَنِی مِنْ عُتَقَائِکَ مِنَ النَّار

अल्लाहुम–म इन्नी असअलु–क बिकिताबिकल मुन्ज़ल। व मा

फ़ीहि व फ़ीहिस्मुकल अकबर। व अस्माउकल हुस्ना। व मा युख़ाफु व युरजा। अन्तज अ–ल–नी मिन उ–त–क़ाइ–क मिनन्नार।

तर्जुमाः परवरदिगार मैं तुझसे तेरी नाज़िल की हुई किताब के ज़रिये सवाल करता हूँ और जो कुछ इसमें है और इसमें तो तेरा सबसे बड़ा नाम है और तेरे असमाए हुस्ना हैं और हर वह चीज है जिस से ख़ौफ़ किया जाता है और वह सारी चीज़े हैं जिनकी उम्मीद लगाना चाहिए, उन सबका वास्ता दे कर तुझसे सवाल करता हूं कि मुझे उन लोगों में से क़रार दे जिनको तूने जहन्नम की आग से आज़ाद किया है।

(4) हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं कि इसके बाद कुरआन सर पर रखकर कहे:

اَللّٰھُمَّ بِحَقِّ ھٰذَا الْقُرْآنِ وَ بِحَقِّ مَنْ اَرْسَلْتَہٗ بِہٖ وَ بِحَقِّ کُلِّ مُؤْمِنٍ مَدَحْتَہٗ فِیْہِ
وَ بِحَقِّکَ عَلَیْھِمْ فَلَا اَحَدَ اَعْرَفُ بِحَقِّکَ مِنْکَ

अल्लाहुम–म बिहक़्क़ि हाज़ल कुरआन। व बिहक़्क़ि मन अरसल्तहू बिह। व बिहक़्क़ि कुल्लि मोमिनिम मदहतहू फ़ीह। व बिहक़्क़ि–क अलैहिम फ़ला अ–ह–द आरफु बिहक़्क़ि–क मिन्क्।

तर्जुमाः परवरदिगार इस कुरआन के वास्ते से और उस अज़ीम हस्ती के वास्ते से जिसको तूने यह कुरआन देकर भेजा है और हर उस मोमिन का वास्ता जिसकी तूने इस में तारीफ़ की है। और तेरे उस हक़ का वास्ता

जो उन पर है। और हक़ तो यह है कि कोई भी तुझसे ज़्यादा तेरे हक़ को पहचानने वाला नहीं है।

फिर कहे:

दस बारः **बि–क या अल्लाहु** بِكَ يَااَللّٰهُ

ऐ अल्लाह ! तुझे खुद तेरा वास्ता

दस बारः **बि मुहम्मदिन** بِمُحَمَّدٍ

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स0] का वास्ता

दस बारः **बि अलीयिन** بِعَلِيٍّ

हज़रत अली[अ0] का वास्ता

दस बारः **बि फ़ाति–म–त** بِفَاطِمَةَ

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स0] का वास्ता

दस बारः **बिल ह–स–नि** بِالْحَسَنِ

इमामे हसन[अ0] का वास्ता

दस बारः **बिल हुसैनि** بِالْحُسَيْنِ

इमामे हुसैन[अ0] का वास्ता

दस बारः **बि अली यिब्निल हुसैनि** بِعَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ

इमामे ज़ैनुल आबेदीन[अ0] का वास्ता

दस बारः **बि मुहम्मदिब्नि अलीयिन** بِمُحَمَّدِبْنِ عَلِيٍّ

इमामे मुहम्मद बाक़िर[अ0] वास्ता

दस बारः **बि जाफ़रिब्नि मुहम्मदिन** بِجَعْفَرِبْنِ مُحَمَّدٍ

इमामे जाफ़र सादिक़[अ0] का वास्ता

दस बारः **बि मूसब्नि जाफ़रिन** بِمُوْسیٰ بْنِ جَعْفَرٍ

इमामे मूसा काज़िम[अ०] का वास्ता

दस बारः **बि अली यिब्नि मूसा** بِعَلِیِّ بْنِ مُوْسیٰ

इमामे अली रज़ा[अ०] का वास्ता

दस बारः **बि मुहम्मदिब्नि अलीयिन** بِمُحَمَّدِ بْنِ عَلِیٍّ

इमामे मुहम्मद तक़ी[अ०] का वास्ता

दस बारः **बि अली यिब्नि मुहम्मद** بِعَلِیِّ بْنِ مُحَمَّدٍ

इमामे अली नक़ी[अ०] का वास्ता

दस बारः **बिल हसनिब्नि अलीयिन** بِالْحَسَنِ بْنِ عَلِیٍّ

इमामे ह़सन असकरी[अ०] का वास्ता

दस बारः **बिल हुज्जतिल काइमि** بِالْحُجَّةِ بْنِ الْحَسَنِ الْعَسْكَرِیِّ

ह़ज़रत हुज्जतिल क़ाएम[अ०] का वास्ता

फिर जो हाजत रखता हो तलब करे।

(5) **ज़ियारत इमामे हुसैन[अ०]**: शबे क़द्र में एक मुनादी आवाज़ देता है कि जो भी इमामे हुसैन[अ०] की क़ब्र की ज़ियारत के लिए आया है खुदा ने उसको बख़्श दिया।

(6) **दुआए जौशन कबीर** : इसलिए कि इसमें खुदा के हज़ार नाम हैं।

(ब) ख़ास आमाल

उन्नीसवीं रात

(1) 100 बार कहे: अस्तग़फ़िरुल्ला–ह रब्बी व अतूबु इलैहि

(2) 100 बार कहे: अल्लाहुम्मल अन क़–त़–ल़–त अमीरिल मोमिनीन

(3) ये दुआ पढ़े:

يَاذَالَّذِىْ كَانَ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ ثُمَّ خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ثُمَّ يَبْقَىٰ وَيَفْنَىٰ كُلُّ شَيْءٍ
يَاذَاالَّذِى لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَيَا ذَاالَّذِى لَيْسَ فِي السَّمٰوٰتِ الْعُلٰى وَلَافِى
الْاَرَضِيْنَ السُّفْلٰى وَلَافَوْقَهُنَّ وَلَاتَحْتَهُنَّ وَلَابَيْنَهُنَّ اِلٰهٌ يُعْبَدُ غَيْرُهٗ لَكَ
الْحَمْدُ حَمْداً لَايَقْوىٰ عَلىٰ اِحْصَائِهٖ اِلَّا اَنْتَ فَصَلِّ عَلىٰ مُحَمَّدٍ وَاٰلِ مُحَمَّدٍ
صَلٰوةً لَايَقْوىٰ عَلىٰ اِحْصَائِهَا اِلَّا اَنْتَ

याज़ल्लज़ी का–न क़ब–ल कुल्लि शैइ, सुम–म ख़–ल–क़ कुल–ल शैइन, सुम–म यबक़ा व यफ़ना कुल्लु शैइन, या ज़ल्लज़ी लै–स कमिस्लिही शैउन, व या ज़ल्लज़ी लै–स फ़िस्समावातिल उला वला फ़िल अरज़ीनस्सुफ़ला, वला फ़ौ–क़–हुन–न, वला तहतहुन–न, वला बैनहुन–न, इलाहुन युअ्बदु ग़ैरुहू, लकल हम्दु हमदन ला यक़्वा अला इहसाइही इल्ला अन–त, फ़सल्लि अला मुहम्मदिंव व आलि मुहम्मद, सलातन ला यक़्वा अला इहसाइहा इल्ला अन–त।

(4) फ़िर ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيمَا تَقْضِي وَتُقَدِّرُ مِنَ الْأَمْرِ الْمَحْتُومِ وَفِيمَا تَفْرُقُ مِنَ
الْأَمْرِ الْحَكِيمِ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَفِي الْقَضَاءِ الَّذِي لَا يُرَدُّ وَلَا يُبَدَّلُ أَنْ تَكْتُبَنِي
مِنْ حُجَّاجِ بَيْتِكَ الْحَرَامِ الْمَبْرُورِ حَجُّهُمُ الْمَشْكُورِ سَعْيُهُمُ
الْمَغْفُورِ ذُنُوبُهُمُ الْمُكَفَّرِ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَاجْعَلْ فِيمَا تَقْضِي وَتُقَدِّرُ أَنْ تُطِيلَ
عُمْرِي وَتُوَسِّعَ عَلَيَّ فِي رِزْقِي وَتَفْعَلَ بِي

अल्लाहुम्मज अल फ़ीमा तक़ज़ी व तुक़द्दिरु मिनल अमरिल महतूम। व फ़ीमा तफ़्रुकु मिनल अमरिल हकीमि फ़ी लैलतिल क़द्र। व फ़िल क़ज़ाइल्लज़ी ला युरद्दु वला युबद्दिल। अन्तक तु–बनी मिन हुज्जाजि बैतिकल हराम। अल मबरूरि हज्जुहुम। अल मशकूरि सअ्युहुम। अल मग़फ़ूरि ज़ुनुबुहुम। अल मुकफ़्फ़िरि अनहुम सय्यिआतिहिम। वजअल फ़ीमा तक़्ज़ी। व तुक़द्दिर अन तुती–ल उमरी। व तुवस्सि–अ अलै–य फ़ी रिज़्क़ी। व तफ़अल बी।

इक्कीसवीं रात

इस रात की फ़ज़ीलत उन्नीसवीं शब से ज़्यादा है। गुस्ल, ज़ियारते इमाम हुसैन[अ], नमाज़ में सात मरतबा "कुल हुवल्लाह", क़ुरआन सर पर रखना और दुआए जौशने कबीर पढ़ने के अलावा इस रात की ख़ास दुआएं हैं जो मफ़ातीहुल जिनान में लिखी हुई हैं।

तेईसवीं रात

ये रात उन्नीसवीं और इक्कीसवीं रात से भी अफ़ज़ल है और

बहुत सी हदीसों के मुताबिक़ यही शबे क़द्र है। पैग़म्बरे अकरम[स0] रमज़ानुल मुबारक की आख़री दस रातों में अपने बिस्तर को इबादत के लिए समेट देते थे और तेईसवीं रात में अपने घर वालों को बेदार रखते थे। जो सो जाता था उसके चेहरे पर पानी डालकर जगाते थे ताकि इस रात की बरकतों से महरूम न हो।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[अ0] इस रात में किसी को अपने घर में सोने नहीं देती थीं, रात की बेदारी के लिए दिन में सोने का हुक्म देती थीं और खाने में कमी करती थीं। आप फ़रमाती थीं कि वह शख़्स महरूम है जो इस रात की बरकत को हासिल न कर सके।

रिवायत मे है कि इमाम सादिक़[अ0] सख़्त मरीज़ थे यहाँ तक कि 23 रमज़ानुल मुबारक की रात आ गयी। आपने फ़रमाया कि मुझे मस्जिद में ले जाया जाए। इमाम[अ0] इस रात सुबह तक मस्जिद में थे।

23वीं रात के खास आमाल

(1)–दुआए फ़रज

اَللّٰهُمَّ كُنْ لِوَلِيِّكَ الْحُجَّةِ بْنِ الْحَسَنِ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰبَائِهٖ فِي هٰذِهِ
السَّاعَةِ وَفِي كُلِّ سَاعَةٍ وَلِيًّا وَّحَافِظًا وَّقَائِدًا وَّنَاصِرًا وَّدَلِيْلًا وَّعَيْنًا حَتّٰى
تُسْكِنَهٗ اَرْضَكَ طَوْعًا وَتُمَتِّعَهٗ فِيْهَا طَوِيْلًا

अल्लाहुम–म कुल–लि वलीयिकल हुज्जतिब्निल हसन। स़–ल–वातु–क अ़लैहि व अ़ला आबाइह। फ़ी हाज़िहिस्साअ़ह। व फ़ी कुल्लि साअ़ह। वलीयंव व हाफ़िज़ा। व क़ाइदंव व नासिरा। व दलीलंव व ऐ़ना। हत्ता तुसकि नहु अर–ज़–क तौआ़। व तुमत्तिअ़हु फ़ीहा त़वीला।

(2)–दुआः दुआए मकारिमुल अख़लाक़ पढ़ना।

(3)–कुरआनी सूरेः सूरए अनकबूत, सूरए रूम, सूरए हामीम और सूरए दुख़ान पढ़ना।

(4)–सूरए क़द्रः हज़ार मरतबा सूरए क़द्र पढ़ना।

(5)–गुस्लः रात के पहले हिस्से के अलावा आख़री हिस्से में भी गुस्ल करना।

21वीं व 23वीं रात के बेहतरीन आमाल

मरहूम शैख़ सदूक़ ने फ़रमाया कि इन दो रातों का बेहतरीन अमल इल्मी गुफ़्तगू और इल्मी मसाएल पर ग़ौर करना और तबादल–ए–ख़्याल करना हैं।

इस्तग़फ़ार

इमामे सादिक़[अ0] फ़रमाते हैं: जिसकी रमज़ानुल मुबारक में मग़फ़िरत न हो सके तो दूसरे महीने में भी नहीं हो सकती यहाँ तक कि अरफ़ा का दिन आ जाए।

बदनसीब है वह शख़्स जो इस महीने में ख़ुदा की रहमत व मग़फ़िरत से महरूम रहे।

नक़्शा शक्कियाते नमाज़

शक की क़िस्में	क़ियाम में	रुकूअ में	रुकूअ के बाद	सजदों के बीच में	सजदों के बाद	नमाज़े एहतियात
1 व 2 में	बातिल	बातिल	बातिल	बातिल	बातिल	हर हालत में नमाज़ बातिल है फिर से नमाज़ पढ़े।
2 व 3 में	बातिल	बातिल	बातिल	बातिल	सही	तीसरी रकअत मान कर नमाज़ ख़त्म करे और एक रकअत नमाज़े एहतियात खड़े हो कर या दो रकअत बैठ कर पढ़े।
2,3 व 4 में	बातिल	बातिल	बातिल	बातिल	सही	चौथी रकअत मान कर नमाज़ ख़त्म करे और दो रकअत नमाज़े एहतियात खड़े हो कर और दो रकअत बैठ कर पढ़े।
2 व 4 में	बातिल	बातिल	बातिल	बातिल	सही	चौथी रकअत मान कर नमाज़ ख़त्म करे और दो रकअत नमाज़े एहतियात खड़े हो कर पढ़े।
3 व 4 में	सही	सही	सही	सही	सही	चौथी रकअत मान कर नमाज़ ख़त्म करे और एक रकअत नमाज़े एहतियात खड़े हो कर या दो रकअत बैठ कर पढ़े।

शक की क़िस्में	क़याम में	रुकूअ में	रुकूअ के बाद	सजदों के बीच में	सजदों के बाद	नमाज़े एहतियात
4 व 5 में	सही	बातिल	बातिल	बातिल	सही	क़याम में शक होने पर फ़ौरन बैठ जाए, नमाज़ ख़त्म करके एक रकअत नमाज़े एहतियात खड़े हो कर या दो रकअत बैठ कर पढ़े, उसके बाद एहतियातन दो सजदए सहो बजालाए। और अगर दोनों सजदों के बाद शक हो तो 4 रकअत मान कर नमाज़ ख़त्म करके 2 सजदए सहो वाजिब की नियत से बजा लाए।
3, 4 व 5 में	सही	बातिल	बातिल	बातिल	बातिल	बैठ जाए और चौथी रकअत मान कर नमाज़ ख़त्म करे फ़िर 2 रकअत नमाज़े एहतियात खड़े हो कर और दो रकअत बैठ कर पढ़े। और 2 सजदए सहो बजा लाए
3 व 5 में	सही	बातिल	बातिल	बातिल	बातिल	बैठ जाए और नमाज़ ख़त्म करके 2 रकअत नमाज़े एहतियात खड़े हो कर पढ़े और 2 सजदए सहो भी बजा लाए
5 व 6 में	सही	बातिल	बातिल	बातिल	बातिल	बैठ जाए और नमाज़ ख़त्म करके 2 सजदए सहो एहतियात की नियत से दो बार बजा लाए, एक बार 5 व 6 के शक की वजह से और दूसरे क़यामे बेजा की वजह से

2 या 3 रकअती नमाज़ों की रकअतों में अगर शक पैदा हो जाए तो हर हाल में नमाज़ बातिल है। नमाज़ को फिर से दोबारा पढ़ना चाहिए।

* चाहे नमाज़े एहतियात पढ़ना हो या सजदए सहो बजा लाना हो ज़रूरी है कि किबले से मुंह मोड़े बग़ैर बजा लाए वरना पूरी नमाज़ दोबारा पढ़नी पडेगी।

नमाज़े एहतियात की तरकीब

सलाम के बाद दिल में नियत करे कि एक दो रकअत नमाज़े एहतियात पढ़ता हूं वाजिब कुरबतन इलल्लाह। फिर अल्लाहो अकबर कह कर सिर्फ सूरए अलहम्द पढ़े और रुकू: व सजदे करने के बाद तशहुद व सलाम पढ़कर नमाज़ ख़त्म कर दे।

अगर दो रकअत नमाज़े एहतियात पढ़ना हो तो वह भी इसी तरह है बस फ़र्क़ यह है कि इस में एक के बजाए दो रकअतें होती हैं।

नमाज़े एहतियात में दूसरा सूरा और कुनूत नहीं होता।

सजदए सहो का तरीक़ा

सलाम के बाद क़िबले से मुड़े बग़ैर दिल में नियत करे कि फ़लां ग़लती की वजह से 2 सजदए सहो करता हूं वाजिब कुरबतन इलल्लाह और फ़ौरन सजदे मे जाए और यह पढ़े:

बिस्मिल्लाहि व बिल्लाह। अस्सलामु अलै–क अैययुहन्नबिययु व रहमतुल्लाहि व ब–रकातुह।

फिर सर उठा कर इसी तरह दूसरा सजदा करके तशहुद व सलाम पढ़ कर ख़त्म कर दे।

नक़्शए

तर्के सहर व इफ़्तार

माहे रमज़ान 2009 (बउफ़ुके़ लखनऊ)

(मुरत्तबा: हुज्जतुल इस्लाम मौलाना अदीबुल हिन्दी ताब सराह)

रमज़ान	अगस्त	तर्के सहर		अज़ाने सुबह		मग़रिब व इफ़्तार		लखनऊ के वक़्त से ज़्यादती		लखनऊ के वक़्त से कमी	
1430	2009	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	शहर	मिनट	शहर	मिनट
1	23	4	6	4	21	6	48	अहमदाबाद	32	इलाहाबाद	5
2	24	4	7	4	22	6	47	आगरा	12	आज़मगढ़	9
3	25	4	7	4	22	6	46	इन्दौर	21	अयोध्या	5
4	26	4	8	4	23	6	45	उन्नाव	2	बाराबंकी	2
5	27	4	9	4	24	6	44	बदायुं	8	बस्ती	8
6	28	4	9	4	24	6	43	बरेली	6	बनारस	8
7	29	4	10	4	25	6	42	मुम्बई	23	बलिया	12
8	30	4	11	4	26	6	41	बेगलौर	17	बहराइच	4
9	31	4	11	4	26	6	40	भोपाल	14	बांदा	6
10	1	4	12	4	27	6	39	पीलीभीत	5	भागलपूर	19
11	2	4	12	4	27	6	38	झांसी	10	पटना	18
12	3	4	13	4	28	6	37	हैदराबाद	10	प्रतापगढ़	5

रमज़ान	सितम्बर	तर्के सहर		अज़ाने सुबह		मग़रिब व इफ़्तार		लखनऊ के वक़्त से ज़्यादती		लखनऊ के वक़्त से कमी	
1430	2009	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	शहर	मिनट	शहर	मिनट
13	4	4	14	4	29	6	36	दिल्ली	15	पुरनीया	27
14	5	4	14	4	29	6	35	देहरादून	12	जौनपुर	8
15	6	4	15	4	30	6	34	रामपूर	8	दरभंगा	20
16	7	4	15	4	30	6	32	श्रीनगर	21	रांची	18
17	8	4	16	4	31	6	31	सहारनपुर	14	छपरा	16
18	9	4	16	4	31	6	30	सीतापुर	4	रायबरेली	4
19	10	4	17	4	32	6	29	शाहजहांपुर	4	सीवान	14
20	11	4	18	4	33	6	28	अलीगढ़	12	परगना	30
21	12	4	19	4	34	6	27	फ़तेहपुर	3	ग़ाज़ीपूर	11
22	13	4	19	4	34	6	26	कानपुर	3	फ़ैज़ावाद	5
23	14	4	20	4	35	6	25	गवालियार	12	कोलकाता	31
24	15	4	20	4	35	6	24	मद्रास	3	खीरी	1
25	16	4	21	4	36	6	22	मुरादाबाद	9	गोण्डा	4
26	17	4	21	4	36	6	21	मेरठ	13	गोरखपुर	10
27	18	4	22	4	37	6	20	मुज़फ्फ़रनगर	12	मऊ	11
28	19	4	22	4	37	6	19	नागपुर	16	मोनगीर	12
29	20	4	23	4	38	6	18	नैनीताल	6	मिर्ज़ापुर	7
30	21	4	23	4	38	6	17	हरदोई	4	मुज़फ़्फ़रपुर	19

पालने वाले!

उसने क्या पाया जिसने तुझे खो दिया
और उसने क्या खोया जिसने तुझे पा लिया।

इमाम हुसैन (अ0)

TAHA FOUNDATION

Lucknow-India

e-mail: tahafoundation@gmail.com